हिंदी यू.एस.ए की त्रैमासिक ई-पत्रिका

कर्मभूमि

वर्ष ४, अंक १३

सितम्बर २०११

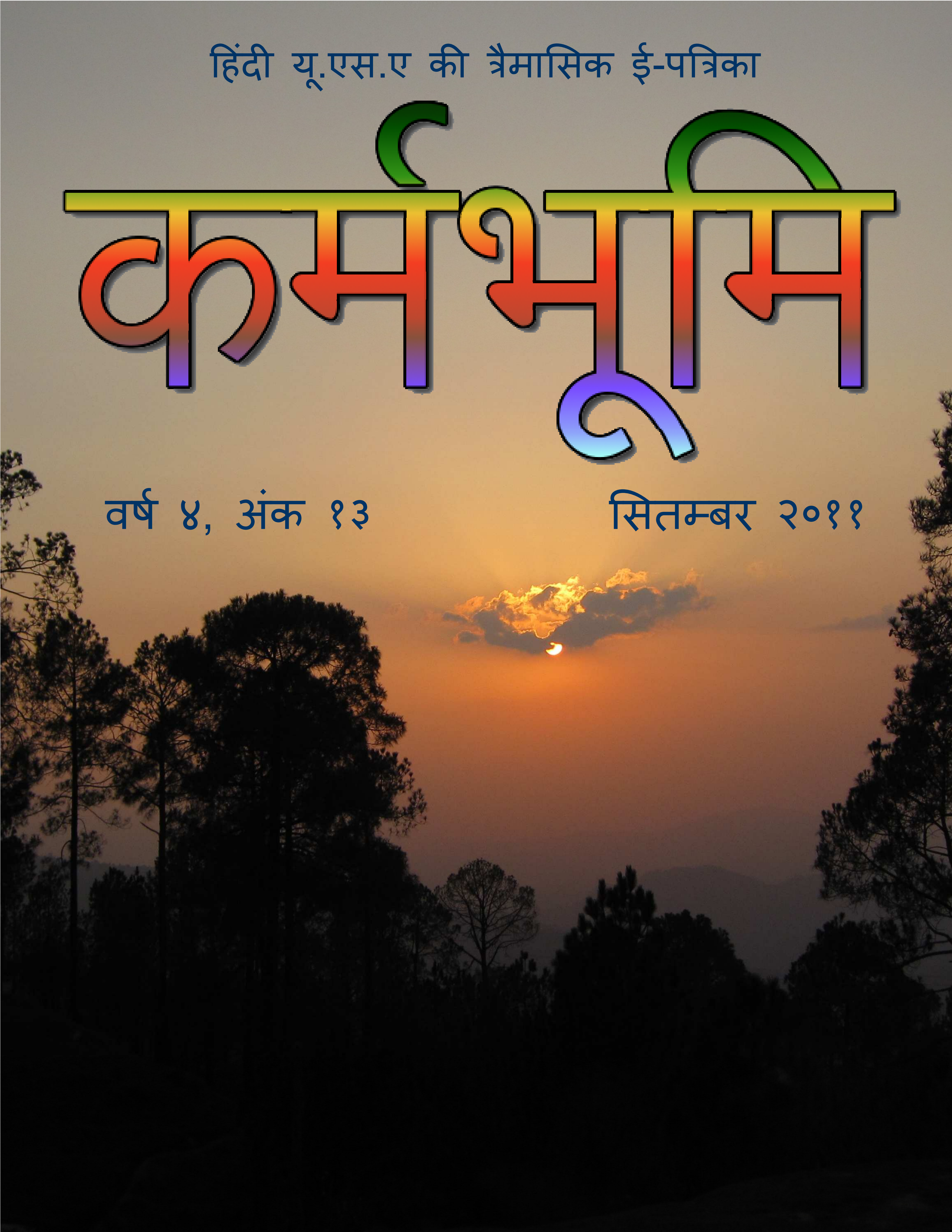

www.hindiusa.org 1-877-HINDIUSA

स्थापना: नवंबर २००१ संस्थापक: देवेन्द्र सिंह

हिन्दी यू.एस.ए. के किसी भी सदस्य ने कोई पद नहीं लिया है, किन्तु विभिन्न कार्यभार वहन करने के अनुसार उनका परिचय इस प्रकार है:

निदेशक मंडल के सदस्य

देवेन्द्र सिंह (मुख्य संयोजक) - 856-625-4335

रचिता सिंह (शिक्षण तथा प्रशिक्षण संयोजिका) - 609-248-5966

राज मित्तल (धनराशि संयोजक) - 732-423-4619

अर्चना कुमार (सांस्कृतिक कार्यक्रम संयोजिका) - 732-372-1911

माणक काबरा (प्रबंध संयोजक) - 718-414-5429

सुशील अग्रवाल (पत्रिका 'कर्मभूमि' संयोजक) - 908-361-0220

हिन्दी भवन समिति

डा. नरेश शर्मा (हिन्दी भवन संयोजक) - 609-226-9702

सुमन दाहिया शाह (प्रचार एवं प्रसार संयोजिका)-732-429-2134

संजय गुप्ता (राशि संचय संयोजक) - 917-297-7367

सूर्य नारायण सिंह (तकनीकी संयोजक) - 732-648-3150

शिक्षण समिति

रचिता सिंह - कनिष्ठा १, वरिष्ठ स्तर

धीरज बंसल - कनिष्ठा २

मोनिका गुप्ता - प्रथमा १ स्तर

अर्चना कुमार - प्रथमा २ एवं मध्यमा २

रश्मि सुधीर - मध्यमा १

सुशील अग्रवाल - उच्चस्तर

पाठशाला संचालक/संचालिकाएँ

एडीसन: राज मित्तल (732-423-4619),

माणक काबरा (718-414-5429), गोपाल चतुर्वेदी (908-720-7596)

सा. ब्रुंस्विक: उमेश महाजन (732-274-2733),

पंकज जैन (908-930-6708), प्रतीक जैन (646-389-5246)

मॉटगोमरी: सुधा अग्रवाल (908-359-8352)

पिस्कैटवे: दीपक लाल (732-763-3608)

ई. ब्रुंस्विक: मैनो मुर्मु (732-698-0118)

वुडब्रिज: अर्चना कुमार (732-372-1911)

जर्सी सिटी: मुरली तुल्शियान (201-533-9296)

प्लेंसबोरो: रॉबिन दाश (609-275-7121), गुलशन मिर्ग (917-597-5443)

लावरेंसविल: रत्ना पाराशर (609-584-1858), मीना राठी (609-273-8737)

ब्रिजवाटर: राज बंसल (732-947-4369)

चैरी हिल: रचिता सिंह (609-248-5966)

चैस्टरफील्ड: शिप्रा सूद (609-920-0177)

फ्रैंक्लिन: दलवीर राजपूत (732-422-7828)

होमडेल: सुषमा कुमार (732-264-3304)

मोनरो: सुनीता गुलाटी (732-656-1962)

नॉरवॉक: बलराज सुनेजा (203-613-9257), विक्रम भंडारी (203-434-7463)

नॉर्थ ब्रुंस्विक: माला महाराणा (848-248-2716)

हम को सारी भाषाओं में हिन्दी प्यारी लगती है, नारी के मस्तक पर जैसे कुमकुम बिंदी सजती है।

संपादकीय

प्रिय पाठक गण सादर नमस्ते,

कर्मभूमि पत्रिका का यह विशेषांक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हिन्दी यू.एस.ए. को आज एक बार फिर से गौरव की अनुभूति हो रही है। हिंदी यू.एस.ए. पिछले १० वर्षों से हिंदी की सेवा में निरंतर प्रयासरत रहा है। कर्मभूमि पत्रिका भी इसी प्रयास का एक अभिन्न अंग है। इसी पत्रिका के माध्यम से हिंदी यू.एस.ए. प्रवासी भारतीय अभिभावकों व बच्चों को हिंदी से जोड़ने व उन्हें अपने विचार हिंदी में व्यक्त करने के लिए प्रेरित वा प्रोत्साहित करता आ रहा है।

इसी वर्ष मई २०११ में दसवाँ हिंदी महोत्सव बहुत ही धूमधाम व भव्यता से सम्पन्न हुआ। यदि कहा जाए कि हिंदी महोत्सव विश्व का सबसे बड़ा हिंदी का रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम है, तो अतिश्योक्ति नहीं होगी, क्योंकि गीत-संगीत व नृत्य प्रतियोगिताएँ तो अधिकतर होती ही रही हैं, परंतु लगभग १५०० बच्चों द्वारा हिंदी प्रतियोगिताएँ, जैसे - हिंदी व्याकरण पर आधारित प्रश्नावली, शब्द अंताक्षरी, हिंदी नाटक, कविता प्रतियोगिता इत्यादि कार्यक्रमों का समायोजन अपने आप में अद्वितीय है। २ दिनों के इस कार्यक्रम में भारत से पधारे कवियों द्वारा रोचक कवि सम्मेलन की प्रस्तुति व मुख्य रूप से बाबा सत्य नारायण मौर्य द्वारा भारत माँ की आरती का प्रस्तुतिकरण विशेष आकर्षण का केंद्र रहा। महोत्सव की विवरणात्मक जानकारी आपको "दसवाँ हिंदी महोत्सव" लेख पढ़ने पर प्राप्त होगी।

कर्मभूमि के प्रस्तुत अंक में विभिन्न प्रकार की पाठ्य सामग्री का समावेश है। भारत में आजकल मुख्य रूप से भ्रष्टाचार समाप्त करने की जैसे आँधी सी चल रही हो, इसी सम्बंधित लेख "भ्रष्टाचार और लोकतंत्र" व "भ्रष्टाचार के खिलाफ अन्नाहजारे" अवश्य पढ़ें। "जिंदगी जिंदादिली का नाम है" लेख तो जैसे नई ऊर्जा का प्रवाह करता हो। "योग सार" नामक लेख जैसे अपने नाम को ही सार्थक करता हुआ जान पड़ता है, व योग के महत्व को समझाते हुए योग विद्या से जोड़े रखता है। "स्वामी दयानंद, लोक साहित्य का मर्म, लुप होते लोक गीत, सम्पूर्ण जन-गन-मन" जैसे लेख अपनी भारतीय संस्कृति से अवगत करवाते हैं। "यह देश आज़ाद कहाँ है, माँ की ममता, एक घिनौना मसला आतंकवाद" में बहुत ही मार्मिक स्पर्श की अनुभूति होती है। "कथा वाचन, सलाद बनो सूप नहीं, बारिश की छतरी" लेख प्रवासी अभिभावकों की विशेष रुचि का केंद्र रहेंगे। "मेरा अनुभव" हिंदी यू.एस.ए. की शिक्षिका की हिंदी यात्रा का अनुभव है। "हनुमान चालीसा भावार्थ व महाभारत प्रश्नावली बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख हैं, इन्हें अवश्य पढ़िए।

हिंदी यू.एस.ए. आपकी आलोचनाओं व समालोचनाओं का स्वागत करता है। आप कर्मभूमि के लिए अपनी रचनाएँ निरंतर भेज कर हिंदी प्रसार के पुण्य भागीरथी कार्य में सहभागी बनें।

धन्यवाद,

कर्मभूमि

लेख–सूची

०५ - आपके पत्र

०६ - दसवाँ हिंदी महोत्सव

०९ - भ्रष्टाचार और लोकतंत्र

१० - भ्रष्टाचार के खिलाफ अन्ना हजारे जी का अभियान

१३ - भारतीय संस्कृति का आधार

१५ - जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है

१८ - योग सार

१९ - सम्पूर्ण जन-गण-मन

२४ - यह देश आज़ाद कहाँ है?

२५ - स्वामी दयानंद सरस्वती

२८ - मेरा अनुभव

२९ - लोक साहित्य का मर्म

३१ - माँ की ममता

३५ - लुप्त होते लोकगीत और हमारी लोक-संस्कृति

३९ - हनुमान चालीसा भावार्थ

४१ - कथा वाचन

४५ - बारिश की छतरी

४७ - सलाद बनो सूप नहीं

५० - महाभारत प्रश्नावली–३

५४ - एक घिनौना मसला - आतंकवाद

५५ - नीला

५६ - उपवन विहार रिपोर्ट

संरक्षक

देवेंद्र सिंह

रूपरेखा एवं रचना

सुशील अग्रवाल

सम्पादकीय मंडल

देवेंद्र सिंह

माणक काबरा

अर्चना कुमार

राज मित्तल

मुख्य पृष्ठ

यह सूर्यास्त का चित्र पिछले वर्ष भारत यात्रा के दौरान रानीखेत में लिया गया था। रानीखेत भारत के उत्तराखण्ड राज्य का एक प्रमुख पहाड़ी पर्यटन स्थल है।

अपनी प्रतिक्रियाएँ एवं सुझाव हमें अवश्य भेजें

हमें विपत्र निम्न पते पर लिखें

karmbhoomi@hindiusa.org

या डाक द्वारा निम्न पते पर भेजें:

Hindi USA
70 Homestead Drive
Pemberton, NJ 08068

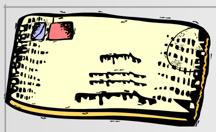

आपके पत्र

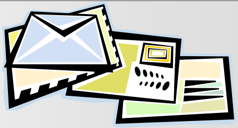

कर्मभूमि मन को इतनी भायी कि इसके सभी उपलब्ध अंक पढ़ डाले। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आप बहुत ही सराहनीय कार्य कर रहे हैं। इस पत्रिका के आकर्षण से मैं भी अपने आपको बचा नहीं पा रहा हूँ।

- आनंद सिंगीतवार

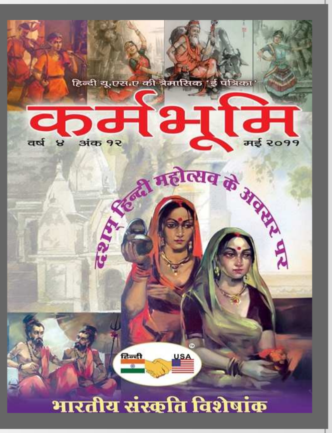

अंक सुरुचिपूर्ण और रोचक बन पड़ा है। भारतीय संस्कृति पर केन्द्रित इस विशेषांक के माध्यम से संस्था की निर्माण संबंधी योजनाओं और कार्यक्रमों व इतिहास आदि की जानकारी मिली। मोहनजोदड़ो, चित्रकला आदि पर केन्द्रित आलेख भी अच्छे लगे। महाभारत केन्द्रित प्रश्नावली स्थाई महत्व की चीज है।

मेरी शुभकामनाएँ व बधाई पूरे पत्रिका परिवार तक पहुँचे।

शुभेच्छु

(डॉ.) कविता वाचक्नवी

निवेदन

सभी लेखकों और कवियों से हमारा विनम्र निवेदन है कि वे अपनी हिन्दी रचनाओं में अंग्रेजी, उर्दू, और फारसी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग कम से कम करें।

आगामी विशेषांक - प्रवासी विशेषांक

दसवाँ हिन्दी महोत्सव

हिन्दी यू.एस.ए. ने हिन्दी महोत्सव की दसवीं वर्षगाँठ मई २१-२२, २०११ को न्यू जर्सी के फ्रेंक्लिन हाई स्कूल में बहुत धूम-धाम और पूरे उत्साह के साथ मनाई। अमेरिका के सब से बड़े इस शानदार हिन्दी कार्यक्रम में लगभग ५,००० दर्शकों ने उपस्थित होकर न्यू जर्सी में हिन्दी की बढ़ती हुई लोकप्रियता की पुष्टि की। हिन्दी महोत्सव का मुख्य उद्देश्य अमेरिका में रहने वाले भारतीय मूल के युवाओं में हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना है।

२१ मई को हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशालाओं के लगभग १,३०० विद्यार्थियों ने हिन्दी की विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे भजन, देशभक्ति-गीत, नाटक, लोकनृत्य, नृत्य नाटिका, और पाठ्यक्रम संबंधी विषयों पर कार्यक्रम प्रस्तुत करके अपनी हिन्दी-ज्ञान क्षमता का प्रदर्शन किया। उच्च कोटि की विभिन्न प्रस्तुतियों का मूल्यांकन करने में निर्णायकों को अत्यधिक एकाग्र होकर सूक्ष्मता से प्रत्येक कार्यक्रम को परखना पड़ा। इस दिन ७० से अधिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने में ९ घंटे से भी अधिक समय लगा। हिन्दी महोत्सव में मध्यांतर करने का समय नहीं मिलता, और इस अद्‌वितीय कार्यक्रम की तैयारी में ४-५ महीने लग जाते हैं।

२२ मई को ९४ विद्यार्थियों ने कविता पाठ के अंतिम दौर की प्रतियोगिता के १० निर्धारित स्तरों में अपनी कविता प्रस्तुत करने की क्षमता का प्रदर्शन किया। ये प्रतियोगी १,५०० प्रतियोगियों में प्रारंभिक स्तरों में हुई कठिन प्रतिस्पर्धा के उपरांत चुने गए थे। यह प्रतियोगिता हिन्दी यू.एस.ए. की सबसे प्रसिद्ध प्रतियोगिता है, जिसके द्‌वारा विद्‌यार्थियों के हिन्दी के शब्द-ज्ञान और उच्चारण को सुधारने के साथ-साथ उनमें आत्मविश्वास, लय, और नेतृत्व-क्षमता के विकास का प्रयोजन भी समाहित है। सभी प्रतियोगियों को पुरुस्कार देकर उनका उत्साह वर्धन किया गया, एवम् जीतने वाले प्रतियोगियों को विशेष पदक देकर सम्मानित किया गया।

२२ मई को ही हास्य-व्यंग्य और देश-भक्ति की कविताओं का कवि सम्मेलन भी आयोजित किया गया, जिसमें भारत से निमंत्रित कवि श्री सुनील जोगी, मनोज कुमार ‘मनोज’, और बाबा सत्यनारायण मौर्य ने १,००० से भी अधिक श्रोताओं का अपनी व्यंग्यात्मक, गीतमय, और ओजपूर्ण कविताओं से भरपूर मनोरंजन किया। बाबा मौर्य जी की भारत माता की आरती विशेष रूप से सराही गई, जिसमें श्रोताओं ने खड़े होकर लय से तालियाँ बजाते हुए बाबाजी की प्रस्तुति में अपने आप को पूरी तरह डुबो दिया। विश्व में हिन्दी के अतिरिक्त ऐसी कोई भी भाषा नहीं है जिसमें इतने सारे श्रोताओं का मनोरंजन बिना किसी वाद्‌य या संगीत के द्‌वारा किया जा सके।

हिन्दी महोत्सव में पुस्तकों के स्टॉल भी लगाए गए,

दसवाँ हिन्दी महोत्सव

जिनमें विद्यार्थियों की पाठ्य पुस्तकों और शिक्षाप्रद कहानियों के साथ-साथ बड़ों के लिए उपन्यास, हिन्दू संस्कृति से संबंधित पुस्तकों और कवियों के सी.डी. भी उपलब्ध थे। पुस्तकों के स्टॉल के अतिरिक्त अन्य विक्रेताओं के स्टॉल भी हिन्दी महोत्सव को एक मेले का रूप दे रहे थे। सभी उपस्थित दर्शकों को निशुल्क विशुद्ध शाकाहारी भारतीय भोजन दोनों दिन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहा।

हिन्दी यू.एस.ए. पिछले १० वर्षों से युवा विद्यार्थियों को हिन्दी का प्रारंभिक ज्ञान उपलब्ध करवाने में जी-जान से सक्रिय है। वर्तमान में हिन्दी यू.एस.ए. की ३६ पाठशालाओं में ४,००० से अधिक विद्यार्थी हिन्दी के ८ स्तरों में हिन्दी सीख रहे हैं। लगभग २५० शिक्षिकाएँ एवम् ७० स्वयंसेवक हिन्दी यू.एस.ए. का सुदृढ़ ढाँचा बनकर एक ऐसी युवा पीढ़ी का निर्माण करने का प्रयास कर रहे हैं, जो हिन्दी जानने के साथ-साथ अपनी भारतीय संस्कृति का भी पालन और सम्मान करेगी।

हिन्दी यू.एस.ए. न्यू जर्सी में एक विशाल हिन्दी भवन बनाने का सक्रिय प्रयास कर रही है। यह भवन अमेरिका में हिंदी के प्रचार-प्रसार में उत्प्रेरक का कार्य करेगा, एवम् युवा पीढ़ी को हिन्दी की एक धरोहर के रूप में हिन्दी सीखने की प्रेरणा देकर उनका मार्गप्रदर्शन करेगा। हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यों की जानकारी के लिए आप हमारी वेब साइट www.hindiusa.org देख सकते हैं या 1-877-HINDIUSA पर संपर्क कर सकते हैं।

दशम् हिन्दी महोत्सव – कुछ झलकियाँ

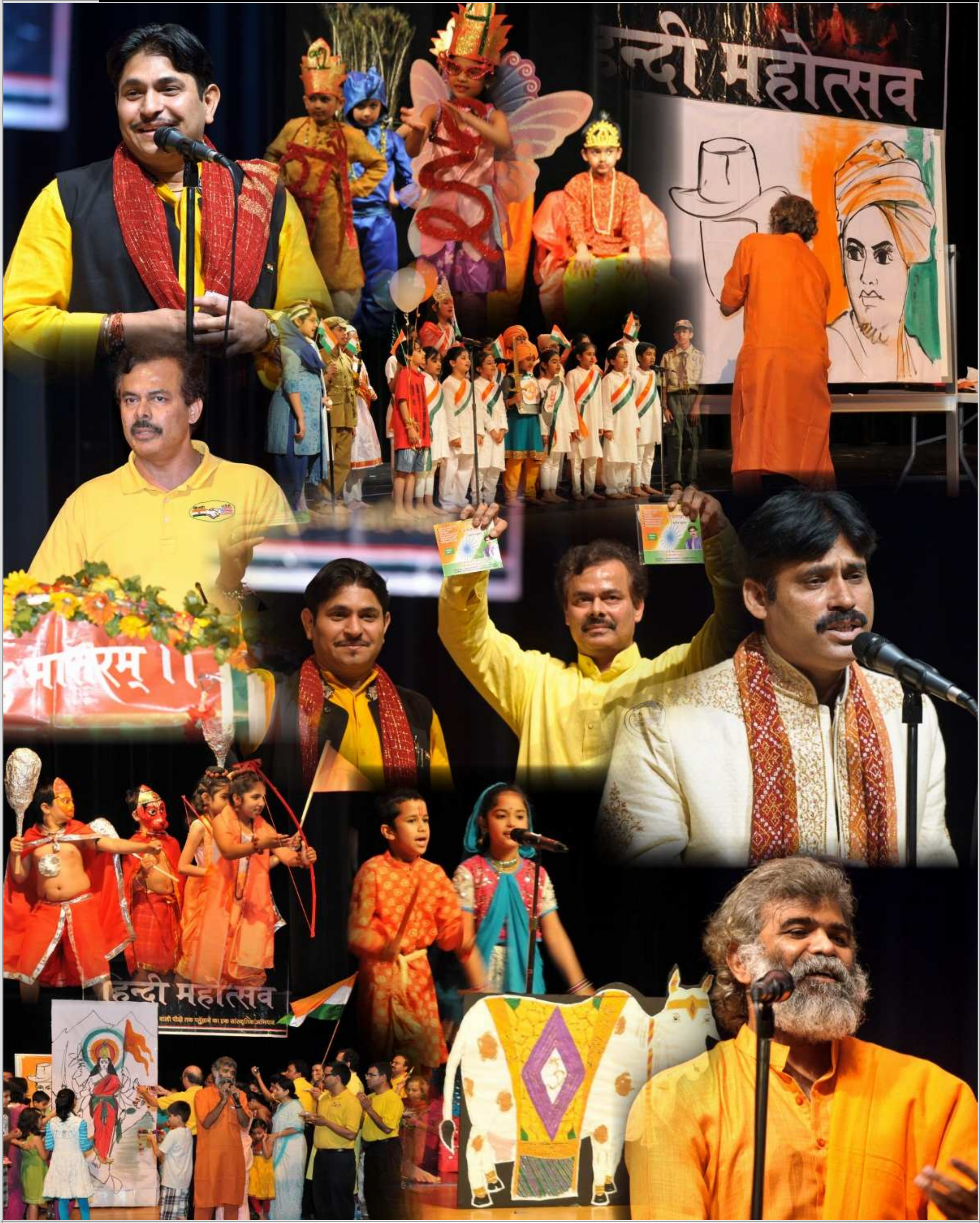

भ्रष्टाचार और लोकतंत्र

देवेन्द्र सिंह

जिस तरह के लोकतंत्र का प्रचार पाश्चात्य सभ्यता के देशों में किया जाता है उससे भ्रष्टाचार कभी समाप्त नहीं हो सकता। इसका मुख्य कारण यह है कि इस तरह की सभ्यता में पूँजीवाद और भौतिकवाद को आवश्यकता से ज्यादा बढ़ावा दिया जाता है, और परस्पराधीनता और एक-दूसरे से मिल-बाँट कर खाने की भावना का तिरस्कार किया जाता है। हर एक व्यक्ति अपने को दूसरे से बड़ा पूँजीपति बनने के लक्ष्य को लेकर अपना जीवन सुखी और आध्यात्मिक बनाने के स्थान पर दौड़भाग वाला और तनावपूर्ण बना लेता है। यह व्यवस्था प्रणाली नाकाम हो चुकी है, परंतु राजनेता लोगों को गुमराह किये हुए हैं, ताकि वे लोगों पर काल्पनिक लोकतंत्र के नाम पर शासन कर सकें।

दशकों से पाश्चात्य पद्धति के लोकतंत्र में अर्थव्यवस्था में कभी स्थायी सुधार नहीं हुआ। पाश्चात्य उपभोक्तावाद व्यक्ति को अपनी चादर को और बड़ा करने को उकसाता है, और लोगों को विश्वास दिलवाता है कि कुछ विशेष वस्तुओं के बिना उनका जीवन अधूरा है। इससे दिखावा करने की प्रवृति का जन्म होता है, और लोगों में भ्रष्टाचार करने की आदत पड़ जाती है।

भारत में भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई वास्तव में पाश्चात्य पूँजीवाद और उपभोक्तावाद को समाप्त करने की लड़ाई है, परंतु इसके विरुद्ध लड़ने वाले सही शत्रु को ठीक तरह से समझ नहीं पाए हैं। राम-राज्य की स्थापना अर्थव्यवस्था सुधारने और भ्रष्टाचार खत्म करने का सबसे अच्छा समाधान है। इस तरह की व्यवस्था में एक आम नागरिक ही सही मायने में मालिक होता है, और प्रजा के सेवक अपने वचन और कर्म से नागरिकों के हर हित के लिए कार्यशील रहते हैं। इस तरह की व्यवस्था में कोई भी नागरिक अपनी आवश्यकता से अधिक नहीं बटोरता, और पूँजी अर्जित करने का प्रमुख उद्देश्य किसी जरूरतमंद की सहायता करना और समाज के उत्थान के कार्यों में अपने द्रव्य का दान देना होता है। इस तरह की व्यवस्था में चुनाव नहीं करवाए जाते, क्योंकि चुनाव व्यक्तियों को जोड़ने के बदले एक दूसरे से अलग करते हैं। राम राज्य में समाज के वरिष्ठ एवम् ज्ञानवान नागरिक व्यक्ति की योग्यता के अनुसार उसका कार्यपद निर्धारित करते हैं।

भ्रष्टाचार के विरुद्ध सख्त नियम होने चाहिए, ताकि कोई भी नागरिक यह पाप करने की चेष्टा ना करे। परंतु उससे भी अधिक आवश्यक है कि लोगों में पूँजीवाद और भोगवाद की वर्तमान मानसिकता को हटाया जाए। बिना यह मानसिकता बदले चाहे बाबा रामदेव हों या अन्ना हजारे जी, भ्रष्टाचार का अंत नहीं हो सकता। परंतु यह सदियों से स्थापित मानसिकता अभी चंद वर्षों में समाप्त नहीं होगी, इसलिए समय की पुकार के अनुसार भ्रष्टाचार के विरुद्ध कठोर नियम तुरंत बनने चाहिए, और पूँजीवाद और भोगवाद को कम करने हेतु एक जोरदार अभियान प्रारंभ होना चाहिए। आध्यात्मवाद बढ़ेगा तो पूंजीवाद और भोगवाद अपने आप कम होगा, क्योंकि राम और रावण एक ही राज्य में नहीं रह सकते। आध्यात्मवाद बढ़ाने का कर्तव्य हर विश्व के नागरिक का है। यदि हम ऐसा कर पाए तो भारत ही नहीं पूरा विश्व एक सही समृद्धता की ओर अग्रसर होगा, जिसमें हर व्यक्ति अपनी सामर्थ्य के अनुसार समाज के उत्थान में अपना योगदान देगा, और धरती पर अपने आने का उद्देश्य पूरा करेगा।

भ्रष्टाचार के खिलाफ अन्ना हजारे जी का अभियान

गुलशन मिर्ग

संचालक वेस्ट विंडसर प्लैंस्बोरो हिंदी पाठशाला

मुझे आज से दस साल पहले की एक घटना याद आ रही है जब गाज़ियाबाद मोटर लाईसेन्स के दफ्तर की ऑफिसर ने मेरे इंटरनेशनल ड्राविंग लाईसेन्स के पेपर मेरे मुँह पर दे कर मारे और बोली कि तुम्हारा लाईसेन्स नहीं बन सकता, जाओ जो करना है कर लो क्योंकि मैंने उसके ऑफिसर को ५,००० रुपए रिश्वत देने से मना कर दिया था और उसके कमरे में शिकायत करने पहुँच गया। मैं अमेरिका बिना इंटरनेशनल ड्राविंग लाईसेन्स के आ गया। अब आते ही तो ड्राविंग लाईसेन्स बन नहीं जाता और अमेरिका में बिना कार के तो जीवन अस्त-व्यस्त है। उस समय मेरी पत्नी गर्भवती थी। डॉक्टर के पास जाने के लिए, घर के लिए आवश्यक सामान लाने के लिए या तो मुझे दोस्तों को बुलाना पड़ता था या टैक्सी बुलानी परती थी। मुझे ४-५ महीने तक अमेरिका बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। जब तक मैंने यहाँ पर ड्राविंग लाईसेन्स नहीं ले लिया। भारत में **भ्रष्टाचार** का यह एक छोटा सा रूप था। आज इस बात को १० साल बीत गए लेकिन यह घटना मेरे दिल और दिमाग में आज भी ताजी है।

चाहे आप टेलीफोन ऑफिस जाएँ, बिजली के ऑफिस में जाएँ, स्कूल में बच्चों को दाखिला दिलवाने जाएँ, राशन कार्ड बनवाएँ या पासपोर्ट बनवाएँ, बिना रिश्वत दिए तो आपका काम हो ही नहीं सकता। छोटे दर्जे के अधिकारी रिश्वत ले कर छोटा घपला करते हैं और बड़े अधिकारी रिश्वत ले कर बड़ा घपला करते हैं। उदाहरण के लिए - १९५७ में १.२५ करोड़ रुपए का मुद्रा घोटाला जिसमें लाइफ इन्सोरंस कार्पोरेशन को नकली शेयर्स बेचे गए थे, १९८७ में ४० करोड़ रुपए का बोफोर्स घोटाला, १९९६ में ९५० करोड़ का चारा घोटाला, २००१ में ११५ हजार करोड़ रूपए का स्टॉक मार्केट घोटाला, २००३ में २० हजार करोड़ का स्टंप पेपर प्रिंटिग घोटाला, २००५ में ५०० करोड़ रूपए की रिश्वत दी गयी थी, १९ हजार करोड़ की सब-मरीन डील को साइन करने के लिए, २००९ में ७,००० करोड़ रूपए का सत्यम घोटाला, २०१० में कॉमन वैल्थ गेम्स पर ७०,००० करोड़ रूपए खर्च हुए। उसमें से आधा रूपया लोगों की अपनी जेबों में चला गया। उदाहरण के लिए एक तरल साबुन की शीशी ९,३७९ रूपए की किराये पर ली गयी। २जी घोटाले ने तो पिछले सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए - १७६ हजार करोड़ रूपए, २००८ में फोन कंपनियों को २००१ के रेट पर लाइसेंस दिए गए। यह घोटालों और रिश्वत की सूची बहुत लंबी है।

इस भ्रष्टचार के कारण भारत में प्रति वर्ष

भ्रष्टाचार के खिलाफ अन्ना हजारे जी का अभियान

करोड़ों रुपए की रिश्वत खाई जाती है जिसका कोई रिकॉर्ड भी नहीं होता। जिसके कारण अमीर और अमीर होते चले जा रहे हैं और गरीब व्यक्ति बेचारे और गरीब होते चले जा रहे हैं। यही पैसा यदि देश की उन्नति के लिए प्रयोग किया जाए तो, भारत संसार का एक अमीर और सम्पन देश बन जाए।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥

सन २०११ में अन्ना हजारे नाम के एक महापुरुष जिनकी आयु ७४ वर्ष है, ने इस भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक अहिंसा की जंग छेड़ी। उन्होंने कहा कि वो १६ अगस्त २०११ को दिल्ली के रामलीला मैदान में अनशन पर बैठेंगे और तब तक कुछ नहीं खाएँगे जब तक भारतीय सरकार भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए कठोर कानून नहीं बनाती और जन लोकपाल बिल पास नहीं करती। इसमें चाहे उनकी जान ही क्यों न चली जाए।

अन्ना जी के इस आंदोलन को पूरे देश में समर्थन मिला और लोग उनके साथ जुड़ते ही चले गये। १२ दिन तक चले अन्ना जी के इस आंदोलन में दिल्ली के रामलीला मैदान से लेकर देश के शहर-शहर, गाँव-गाँव के गली-मोहल्लों से करोड़ों की संख्या में लोग घरों से बाहर निकल कर सड़कों पर आ गये और इस आंदोलन में अन्ना जी के साथ जुड़ गये। देश ही नहीं विदेशों में बसे भारतीयों ने भी इस आंदोलन में भाग लिया। न्यू जर्सी अमेरिका में ओकट्री रोड एडिसन पर भारतीयों ने शानिवार और रविवार को व्रत रखा और भ्रष्टाचार के विरुद्ध आन्दोलन में अन्ना जी का साथ दिया। अन्ना जी का अनशन २८८ घंटों तक बिना कुछ खाए पिए चला। भारत के प्रधान मंत्री श्री मनमोहन सिंह जी ने और देश की बड़ी-बड़ी हस्तियों ने अन्ना जी को अनशन छोड़ने के लिए बोला। लेकिन अन्ना जी अपनी बात पर अटल रहे कि जब तक सरकार जन लोकपाल बिल पास करने के लिए मान नहीं जाती, तब तक वे अनशन से नहीं उठेंगे, इसमें चाहे उनकी भूख से जान ही क्यों न चली जाए।

२२ अगस्त २०११ को अन्ना जी की हालत खराब होनी आरम्भ हो गयी और उनका वजन ५ किलो से ज्यादा कम हो गया जिसके दवाब के चलते भारत सरकार ने सर्वदलीय बैठक शुरू की। बैठक में जन लोकपाल बिल पर चर्चा जारी हुई। संसद में लंबी बहस हुई। लेकिन कई उतार-चढ़ाव के बाद, २७ अगस्त २०११ को भारत सरकार भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए जन लोकपाल बिल को पास करने के लिए तैयार हो गयी।

२८ **अगस्त** २०११ **को** अन्ना जी ने सुबह सवा दस बजे २८८ घंटे लंबा अनशन तोड़ दिया लेकिन उन्होंने कहा कि ये अनशन टूटा है ना कि आंदोलन।

भ्रष्टाचार के खिलाफ अन्ना हजारे जी का अभियान

जब तक उनका जनलोकपाल बिल बन नहीं जाता वे पूरे भारत में भ्रमण करेंगें।

अन्ना जी के साथ बहुत से लोगों ने अहम् भूमिका निभाई जिनका नाम इस देश के इतिहास में लिखा जाएगा। आई आई टी खड़कपुर अरविंद केजरीवाल जिन्होंने दिल्ली इनकम टैक्स विभाग को छोड़ कर देश की सेवा करने और भ्रष्टाचार को समाप्त करने का बीड़ा उठाया। भारतीय पुलिस ऑफिसर से सेवानिवृत्त किरण बेदी जी को कौन नहीं जानता जिन्होंने दिल्ली में नियम तोड़ने पर प्रधान मंत्री इंदिरा गाँधी की गाड़ी उठवा ली थी।

अन्ना जी के इस आन्दोलन में एक चीज थी जो हर जगह देखने को मिली, वो थी अन्ना जी की टोपी। देश के इतने बड़े आंदोलन में अन्ना की टोपी ने लोगों के अंदर गांधीवादी विचारधारा को प्रवाहित करते हुए अहिंसात्मक रुख प्रदान किया। इतने बड़े आंदोलन में देश के किसी भी भाग से हिंसा का कोई समाचार नहीं आया।

मैं आशा करता हूँ कि जन लोकपाल बिल के लागू होने के बाद भारत में भ्रष्टाचार कम होगा! मेरा आप सब से अनुरोध है कि अब यदि आप से कोई रिश्वत मांगे तो उसे अन्नागीरी दिखाते हुए एक सफ़ेद टोपी भेंट करें।

भारत माता की जय!

न्यू जर्सी, अमेरिका में ओकट्री रोड एडिसन पर भारतीयों ने शानिवार और रविवार को व्रत रखा

भारतीय संस्कृति का आधार

पंडित श्री राम शर्मा आचार्य के साहित्य एवं संकलन पर आधारित

विश्व की सर्वोत्कृष्टि संस्कृति भारतीय संस्कृति है, यह कोई गर्वोक्ति नहीं अपितु वास्तविकता है। भारतीय संस्कृति को देव संस्कृति कहकर सम्मानित किया गया है। आज जब पूरी संस्कृति पर पाश्चात्य सभ्यता का तेजी से आक्रमण हो रहा है, यह और भी अनिवार्य हो जाता है कि, उसके हर पहलू को जो विज्ञान सम्मत भी है तथा हमारे दैनिक जीवन पर प्रभाव डालने वाला भी, हम जन-जन के समक्ष प्रस्तुत करें ताकि हमारी धरोहर के आधारभूत तत्त्व नष्ट न होने पाएँ।

भारतीय संस्कृति हमारी मानव जाति के विकास का उच्चतम स्तर कही जा सकती है। इसी की परिधि में सारे विश्व के विकास के 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सारे सूत्र आ जाते हैं। हमारी संस्कृति में जन्म के पूर्व से मृत्यु के पश्चात् तक मानवी चेतना को संस्कारित करने का क्रम निर्धारित है। मनुष्य में पशुता के संस्कार उभरने न पाएँ, यह इसका एक महत्त्वपूर्ण दायित्व है। भारतीय संस्कृति मानव के विकास का आध्यात्मिक आधार बनाती है और मनुष्य में संत, सुधारक, शहीद की मनोभूमि विकसित कर उसे मनीषी, ऋषि, महामानव, देवदूत स्तर तक विकसित करने की जिम्मेदारी भी अपने कंधों पर लेती है। सदा से ही भारतीय संस्कृति महापुरुषों को जन्म देती आयी है व यही हमारी सबसे बड़ी धरोहर है।

किसी भी व्यक्ति का सांस्कृतिक महत्त्व इस बात पर निर्भर है कि उसने अपने अहम् से अपने को कितना बंधन-मुक्त कर लिया है। वह व्यक्ति भी सुसंस्कृत है, जो अपनी आत्मा को माँझ कर दूसरे के उपकार के लिए उसे नम्र और विनीत बनाता है। जितना व्यक्ति मन, कर्म, वचन से दूसरों के प्रति उपकार की भावनाओं और विचारों को प्रधानता देगा, उसी अनुपात से समाज में उसका सांस्कृतिक महत्त्व बढ़ेगा। दूसरों के प्रति की गई भलाई अथवा बुराई को ध्यान में रखकर ही हम किसी व्यक्ति को भला-बुरा कहते हैं। सामाजिक सद्गुण ही, जिनमें दूसरों के प्रति अपने कर्त्तव्य-पालन या परोपकार की भावनाएँ प्रमुख हैं, व्यक्ति की संस्कृति को प्रौढ़ बनाती है।

> किसी भी व्यक्ति का सांस्कृतिक महत्त्व इस बात पर निर्भर है कि उसने अपने अहम् से अपने को कितना बंधन-मुक्त कर लिया है।

संसार के जिन विचारकों ने इन विचार तथा कार्य-प्रणालियों को सोचा और निश्चय किया है, उनमें भारतीय विचारक सबसे आगे रहे हैं। विचारों की पकड़ और चिन्तन की गहराई में हिन्दू धर्म की तुलना अन्य सम्प्रदायों

से नहीं हो सकती। भारत के हिन्दू विचारकों ने जीवन मंथन कर जो नवनीत निकाला है, उसके मूलभूत सिद्धांतों में वह कोई दोष नहीं मिलता, जो अन्य सम्प्रदायों, मतों, तथा पंथों में मिल जाता है। हिन्दू-धर्म महान मानव धर्म है, व्यापक है और समस्त मानव मात्र के लिए कल्याणकारी है। वह मनुष्य में ऐसे भाव और विचार जागृत करता है, जिन पर आचरण करने से मनुष्य और समाज स्थायी रूप से सुख और शांति का अमृत-घूँट पी सकता है। हिंदू संस्कृति में जिन उदार तत्वों का समावेश है, उनमें तत्त्व ज्ञान के वे मूल सिद्धांत रखे गये हैं, जिनको जीवन में ढालने से आदमी सच्चे अर्थों में “मनुष्य” बन सकता है।

“संस्कृति” शब्द का अर्थ है: सफाई, स्वच्छता, शुद्धि या सुधार। जो व्यक्ति सही अर्थों में शुद्ध है, जिसका जीवन परिष्कृत है, जिसके रहन-सहन में कोई दोष नहीं है, जिसका आचार-व्यवहार शुद्ध है, वही सभ्य और सुसंस्कृत कहा जायेगा। "सम्यक् करणं संस्कृति" प्रकृति की दी हुई भद्दी, मोटी कुदरती चीज को सुन्दर बनाना, सम्भाल कर रखना, अधिक उपयोगी और श्रेष्ठ बनाना उसकी संस्कृति है। जब हम भारतीय या हिन्दू संस्कृति शब्दों का प्रयोग करते हैं, तो हमारा तात्पर्य उन मूलभूत मानव-जीवन में अच्छे संस्कारों से होता है जिनसे जीवन और शुद्ध परिष्कृत बन सकता है। हम देखते हैं कि प्रकृति में पाई जाने वाली वस्तु प्रायः साफ नहीं होती। बहुमूल्य हीरे, मोती, माणिक आदि सभी को शुद्ध करना पड़ता है। कटाई और सफाई से उनका सौंदर्य और निखर उठता है और कीमत बढ़ जाती है। इसी प्रकार सुसंस्कृत होने से मानव का अन्तर और बाह्य जीवन सुन्दर और सुखी बन जाता है। संस्कृति व्यक्ति, समाज और देश के लिए अधिक उपयोगी होती है। उसका आचार-व्यवहार, रहन-सहन सम्भाला हुआ, सुन्दर, आकर्षक और अधिक उपयोगी होता है, फिर उस व्यक्ति का परिवार तथा उनके बच्चों के संस्कार भी अच्छे बनते हैं। इस प्रकार मानव मात्र ऊँचा और परिष्कृत होता है और सद्भावना, सच्चरित्रता और सद्गुणों का विकास होता जाता है। अच्छे संस्कार उत्पन्न होने से मन, शरीर और आत्मा तीनों ही सही दिशाओं में विकसित होते हैं। मनुष्य पर संस्कारों का गुप्त रूप से ही राज्य होता है, जैसे संस्कार होते हैं, वैसा ही चरित्र और क्रियाएँ होती हैं। इस गुप्त आंतरिक केन्द्र (संस्कार) के सुधारने से शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक शुद्धि का राजमार्ग खुल जाता है। तात्पर्य यह है कि संस्कृति जितनी अधिक फैलती है, जितना ही उसका दायरा बढ़ता जाता है, उतना ही मानव स्वर्ग के स्थायी सौंदर्य और सुख के समीप आता जाता है। सुसंस्कृत मनुष्यों के समाज में ही अक्षय सुख-शांति का आनंद लिया जा सकता है। संसार की समस्त संस्कृतियों में भारत की संस्कृति ही प्राचीनतम है। आध्यात्मिक प्रकाश संसार को भारत की देन है। गीता, उपनिषद्, पुराण इत्यादि श्रेष्ठतम मस्तिष्क की उपज हैं। हमारे जीवन का संचालन आध्यात्मिक आधारभूत तत्त्वों पर टिका हुआ है। भारत में खान-पान, सोना-बैठना, शौच-स्नान, जन्म-मरण, यात्रा, विवाह, तीज-त्यौहार आदि उत्सवों का निर्माण भी आध्यात्मिक बुनियादों पर आधारित है। जीवन का ऐसा कोई भी पहलू नहीं है, जिसमें अध्यात्म का समावेश न हो, या जिस पर पर्याप्त चिन्तन या मनन न हुआ हो।

भारतीय संस्कृति के अनुसार व्यक्ति का दृष्टिकोण ऊँचा रहना चाहिए। भारतीय संस्कृति में अन्तरात्मा को प्रधानता दी गई है। हिन्दू तत्त्वदर्शियों ने संसार की व्यवहार वस्तुओं और व्यक्तिगत जीवन-यापन के ढंग और मूलभूत सिद्धांतों में परमार्थिक दृष्टिकोण से विचार किया है। तुच्छ सांसारिक सुखोपभोग से ऊँचा उठकर, वासनाजन्य इन्द्रिय सम्बंधी साधारण सुखों से ऊपर उठ आत्म-भाव विकसित कर परमार्थिक रूप से जीवन-यापन को प्रधानता दी गई है।

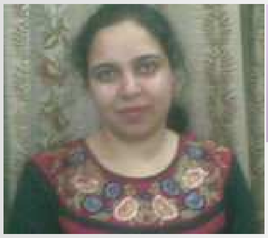

जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है

डॉ. प्रीत अरोड़ा

जन्म - २७ जनवरी १९८५ को मोहाली पंजाब में
शिक्षा - एम.ए. हिंदी - पंजाब विश्वविद्यालय से हिंदी में दोनों वर्षों में प्रथम स्थान के साथ
कार्यक्षेत्र - अध्ययन एवं स्वतंत्र लेखन व अनुवाद। अनेक प्रतियोगिताओं में सफलता, आकाशवाणी व दूरदर्शन के कार्यक्रमों तथा साहित्य उत्सवों में भागीदारी, हिंदी से पंजाबी तथा पंजाबी से हिंदी अनुवाद। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में नियमित लेखन जिनमें प्रमुख हैं- हरिगंधा, पंचशील शोध समीक्षा, अनुसन्धान, अनुभूति, गर्भनाल, हिन्दी-चेतना(कैनेडा), पुरवाई (ब्रिटेन), आलोचना, वटवृक्ष, सृजनगाथा, सुखनवर, वागर्थ, साक्षात्कार, नया ज्ञानोदय, पाखी, प्रवासी-दुनिया, आदि में लेख, कविताएँ, लघुकथाएं, कहानियाँ, संस्मरण, साक्षात्कार, शोध-पत्र आदि। वेब पर मुखरित तस्वीरें नाम से चिट्ठे का सम्पादन।
विपत्र - arorapreet366@gmail.com

शक्ति से तात्पर्य है-बल, ऊर्जा अथवा ताकत। शक्ति के अनेक रूप हैं जैसे-प्राकृतिक शक्ति, शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक शक्ति इत्यादि। इनमें से सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्राकृतिक शक्ति मानी गई है। प्राकृतिक शक्ति भी दो प्रकार की होती है-एक बाह्य शक्ति जो कि प्रकृति प्रदत्त होती है, जैसे पहाड़, पेड़-पौधे, सूरज, चाँद, नदियाँ आदि। दूसरी शक्ति आन्तरिक शक्ति है, जो मनुष्य के अन्दर उसकी आत्मा में व्याप्त होती है जिसे हम इच्छा शक्ति भी कहते हैं। शक्ति उस ऊर्जा का नाम है जिससे मनुष्य प्रोत्साहित होकर उन्नति के उस मार्ग को प्रशस्त कर सकता है, जहाँ पहुँचने की उसने कभी कल्पना भी नहीं की होती। शक्ति उसे प्रेरणा देती है तथा उसी शक्ति के माध्यम से ही मुर्दा शरीर में भी जिजीविषा उत्पन्न हो जाती है। आत्मिक शक्ति किसी भी व्यक्ति के लिए जीवन में आगे बढ़ने और उन्नति के उच्च शिखर तक पहुँचने के लिए अनिवार्य है। मैं आज अपने जीवन की एक वास्तविक घटना को प्रस्तुत कर रही हूँ जो आत्मशक्ति की जीवित मिसाल है।

बात तब की है जब मैं बी.ए. के प्रथम वर्ष में थी तो मेरे जवान भाई की आकस्मिक मृत्यु होने के कारण हमारे परिवार में ऐसी निराशाजनक स्थिति उत्पन्न हो गई जिससे हमें ऐसा प्रतीत होने लगा कि अब हमारे जीवन का कोई उद्देश्य नहीं है। मानसिक तनाव के कारण मैंने अपनी पढ़ाई भी बीच में ही छोड़ दी। मुझे ऐसा लगने लगा कि यदि जीवन का अंत मृत्यु ही है तो फिर जीवन में कुछ कार्य करने और आगे बढ़नें का क्या महत्व है? मेरी माँ जो कि आध्यत्मिक प्रवृत्ति की हैं तथा उनकी प्रभु में अटूट आस्था व विश्वास है, उनके विचारानुसार वह स्वयं को कभी भी अकेला महसूस नहीं करती। उनका कहना है कि एक आन्तरिक शक्ति हमेशा ही उनका पथ-प्रदर्शन करती है और उसी आत्मिक शक्ति के बल पर उन्होंने इस असहनीय दुख को भगवान की यही मर्जी है सोचकर सहन कर लिया। जहाँ मुझे अपनी माँ का सम्बल बनकर उनको साँत्वना देनी चाहिए थी वहाँ मेरी माँ ने मुझे निराशा के अन्धकारमयी गर्त से उबारा।

माँ ने मुझे बड़े प्यार से समझाते हुए कहा,

जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है

“बेटी मैं मानती हूँ कि हमारे परिवार पर बहुत बड़ा कहर टूटा है। यह घाव धीरे-धीरे ही भरेगा। तुम्हारा भाई तो वो बाद में था पहले मेरा बेटा था। पर प्रकृति के आगे किसका जोर चलता है। उठो, अपने भीतर की आत्मशक्ति जगाओ और अपने पैरों पर खड़े होकर अपनी पढ़ाई पूरी करो, क्योंकि अब तुम ही हमारा सहारा हो और बेटा भी।” माँ की इन बातों का मुझ पर कोई असर नहीं हो रहा था क्योंकि कहीं न कहीं मेरे मन पर निराशा का साया पूरी तरह हावी हो चुका था। मेरी माँ ने मेरा कॉलेज में दाखिला भी करवा दिया परन्तु मैं कॉलेज जाने को तैयार न हुई। तो माँ ने सोचा कि क्यों न मैं इसे कहीं बाहर घुमाने के लिए ले जाऊँ। ऐसा सोचकर वे मुझे बाहर घुमाने के लिए बस स्टाप पर ले गईं। बस आने में अभी देरी थी। तभी वहाँ एक लड़की अपनी व्हील चैयर पर बैठकर अकेली आई। वह भी हमारे साथ बस की प्रतीक्षा करने लगी। मैंने देखा कि उस लड़की के चेहरे पर एक ओज विद्यामान था। जैसे ही बस आई वह फूर्ति से अपनी बैसाखी के सहारे व्हील चैयर को बंद करके बगल में दबाये बस में चढ़ गई। तीनों सीटों वाली सीट पर खिड़की के साथ वह लड़की बैठ गई और उसके साथ ही मेरी माँ और मैं भी बैठ गए। वह लड़की हल्का-हल्का कुछ गुनगुना रही थी जिससे उसका उल्लास प्रकट हो रहा था। मौका मिलते ही मेरी माँ ने उससे बातचीत शुरू कर दी। उसने अपना नाम दुर्गा बताया। उसकी उम्र लगभग चौबीस वर्ष थी। उसने बताया कि वह एक मध्यवर्गीय परिवार से सम्बन्ध रखती है और उसके पिता जी का देहांत हो चुका है। उसकी माँ घरेलू व अशिक्षित महिला हैं। उसके दो भाई-बहन भी हैं। इसलिए उनके पालन-पोषण की जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए वह स्कूल में संगीत का अध्यापन करती है और यही नहीं वह अपनी शैक्षणिक योग्यता को बढ़ाने के लिए स्वयं भी आगे पढ़ रही है। वह अपने भाई-बहन को पढ़ाकर उनका भविष्य उज्ज्वल बनाना चाहती है। दुर्गा ने बताया कि उसने अपनी छोटी-सी उम्र में ही बहुत मुश्किलों का सामना किया है परन्तु उसने कभी भी हार नहीं मानी। आज वह किसी पर पराश्रित नहीं है और न ही किसी की दया की मोहताज़ है। अपितु वह कुछ बनकर दूसरों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहती है। यह सुन माँ दुर्गा से कहने लगी, “बेटी तुम इतना सब कुछ कैसे कर लेती हो?”

एक अनोखे अन्दाज़ से मुस्कराते हुए दुर्गा ने कहा, “आँटी जी यह तो बस प्रभु की कृपा है क्योंकि जहाँ चाह वहाँ राह। आपको एक शेर सुनाती हूँ-जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है, मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते हैं।” मैं चुपचाप माँ और दुर्गा की बातें सुन रही थी। दुर्गा के विचारों को सुनकर मुझे मन-ही-मन ग्लानि महसूस होने लगी कि दुर्गा शारीरिक रूप से अस्वस्थ होने पर भी मानसिक रूप से कितनी शक्तिशाली है। उसके जीवन का एक उद्देश्य है। उसकी बातों से प्रेरित होकर उस दिन मैंने भी एक प्रण लिया कि दुर्गा की तरह मैं भी अपने जीवन में कुछ बनकर दिखाऊँगी। बस फिर क्या था मैंने बी.ए. पूरी की और एम.ए. हिन्दी में प्रवेश ले लिया। यही नहीं मैंने एम.ए. हिन्दी के दोनों वर्षों में पँजाब विश्वविद्यालय में 72 प्रतिशत अंकों के साथ प्रथम स्थान भी प्राप्त किया। फलस्वरूप टेलीविजन के चैनल पँजाब टुडे के सीरियल (कुड़ीए मार उड़ारी) के लिए मेरा इन्टरव्यू भी लिया गया, जिससे मुझे एक नई पहचान मिली। अपनी माँ की प्रेरणा और दुर्गा की सीख से ही आज मैंने हिन्दी में पी.एच.डी भी पूरी कर ली है।

जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है

अब उच्च शिक्षा प्राप्त करके मैंने यह महसूस किया कि मेरे विचार, मेरे मन के भीतर हलचल मचा रहें हैं और वे अभिव्यक्ति पाना चाहते हैं। इसलिए मैंने अपनी भावनाओं को एक लेख के रूप में पिरोकर एक नामी पत्रिका को भेजना चाहा पर यहाँ भी मेरे धैर्य और शक्ति की परीक्षा ली गई। पत्रिका की सम्पादिका से मैंने फोन पर बात की और मैंने कहा, “मैं चाहती हूँ कि मैं अपना एक लेख आपकी पत्रिका के लिए भेजूँ।” इस पर सम्पादिका ने दो टूक उत्तर देते हुए कहा कि, “चाहने से क्या होता है। जीवन में हम सभी कुछ न कुछ चाहते हैं पर यह जरूरी नहीं कि हमारी हर चाहत पूरी हो। इसलिए हम आप जैसी नयी लेखिका को कोई मौका नहीं दे सकते।” सम्पादिका के ऐसे विचारों को सुन कर भी इस बार मेरे मन में कहीं निराशा नहीं आई, अपितु मैं अन्य पत्रिकाओं में अपनी रचनाओं को प्रकाशित कराने का भरसक प्रयास करती रही क्योंकि मैं यह जान चुकी थी कि असम्भव शब्द मूर्खों के शब्दकोश में ही होता है। फलस्वरूप मेरा प्रयास रंग लाया। आज मेरे लेख, कविताएँ, शोध-पत्र व साक्षात्कार इत्यादि कई पत्रिकाओं में प्रकाशित हो रहें हैं। आज मेरी भी एक पहचान है। इसलिए बहुत जरूरी है कि यदि व्यक्ति अपने भीतर की आत्मशक्ति को जागृत करें और दृढ़ निश्चय के साथ अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर हो, तो उसे समय तो लग सकता है लेकिन वह कभी असफल नहीं होगा। अंत में मैं यही कहना चाहूँगी कि जितने भी महान लेखक या महान व्यक्ति हुए हैं, चाहे वे किसी भी क्षेत्र से ही सम्बन्ध रखते हो। उनका प्रतिभाशाली व्यक्तित्व उनके अदम्य साहस, धैर्य व आत्मशक्ति के ही परिणामस्वरूप होता है। किसी लेखक ने ठीक ही कहा है-

“हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब,एक दिन

हो-हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,

हम होंगे कामयाब एक दिन”

ध्येय, लक्ष्य

- ध्येय जितना महान होता है, उसका रास्ता उतना ही लम्बा और बीहड़ होता है। यदि परिस्तिथियाँ अनुकूल हो तो सीधे अपने ध्येय कि ओर चलो, लेकिन परिस्तिथियाँ अनुकूल ना हो तो उस राह पर चलो जिसमे सबसे कम बाधा आने कि संभावना हो - तिरुवल्लुवर
- अपने लक्ष्य को ना भूलो अन्यथा जो कुछ मिलेगा उसमे संतोष मानने लगोगे - बर्नार्ड शा
- अपने जीवन का लक्ष्य बनाओ और अपनी सारी शारीरिक और मानसिक शक्ति उसे पाने में लगा दो - कार्लाइल

योगाचार्य संजय जी का जीवन पिछले 20 वर्षों से योग साधक, होलिस्टिक हैल्थ, योग शिक्षा, मूल्य शिक्षा, शांति व सामाजिक एकता को समर्पित है। दिल्ली के साथ-साथ भारत के अन्य शहरों में भी योग की कक्षाओं व शिविरों का आयोजन करते हैं। दिल्ली में सूर्योदय (अष्टांग योग आधारित प्रशिक्षण केंद्र) के संस्थापक हैं। आर्ष फाउंडेशन ट्रस्ट के फाउंडर ट्रस्टी हैं। आप yogsangam.com पर और जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

संजय सोलंकी

॥ योग सार ॥

सह लेखिका : शशि अग्रवाल

युक्ताहार विहारस्य, युक्त चेष्टस्य कर्मसु ।
युक्तस्वपनावबोधस्य, योगो भवति दुःखहा ॥
योग पावन पर्व है, कर्म, भक्ति ज्ञान का।
शक्ति, कौशल और निष्ठा, चेतना विज्ञान का॥
स्वस्थ तन विश्रांत मन, आनंद इसका ध्येय है।
हृदय में सबके विराजी निज आत्मा ही ज्ञेय है॥
चित्त चंचल वृत्तियों से मुक्त करता योग है।
शांत मन में मन ही करता आत्मा योग है॥
अनभिज्ञ अपने आपसे हम खोजते इस लोक को।
नष्ट कर जीवन का अवसर चाहते परलोक को॥
उठते बवंडर चित्त में होते दुःखी है हम सभी।
खोजते सुख-शांति बाहर जो नहीं मिलते कभी॥
योग करता युक्त हमको स्वयं अपनी आत्मा से।
दूर होते भेद सबही ज्यों मन मिला परमात्मा से॥
प्रणव-जपमय भावना को करता समाधि सिद्ध है।
प्रकृति से पावन पुरुष का योग होता सिद्ध है॥
आधार जीवन का सुरक्षित योग करता नित्य ही।
शौच, तप, संतोष, अध्ययन, संग सत है नित्य ही॥
अहिंसा, सत्य, असत्य, ब्रहमचर्य, अपरिग्रह तो धर्म हैं।
आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार ही कर्म हैं॥
धारणा, ध्यान, समाधि का अभ्यास करना योग है।
पंथ, जाति, देश, दर्शन भेद मुक्ति योग है॥
आत्म-दर्शन ज्ञान देता, शुद्ध-बुद्ध स्वभाव का॥
मुक्त अमृत नित्य-सत्य अभय दुःख अभाव का॥
नित्य-निर्मल, ज्ञान-निष्ठा योग के भण्डार हैं।
स्वास्थ्य सुख वैभव निरंतर प्रेम के भण्डार हैं॥
एक ही परमात्मा की जीव सब संतान हैं।
छोटा-बड़ा अपना-पराया भेद सब अज्ञान हैं॥
आओ सभी मिल करें उस योग का अभ्यास हम।
ब्रहम, गुरु, पुरुषार्थ में निश्चय रखें विश्वास हम॥

धीरज

- शोक में, आर्थिक संकट में या प्रानान्त्कारी भय उत्पन्न होने पर जो अपनी बुद्धि से दुःख निवारण के उपाय का विचार करते हुए दीराज धारण करता है उसे कष्ट नहीं उठाना पड़ता - वाल्मीकि
- जितनी जल्दी करोगे उतनी देर लगेगी - चर्चिल

सम्पूर्ण जन-गण-मन
(अनुवाद व तीन लिपियों में)

(डॉ.) कविता वाचक्नवी

अभी-अभी भारत का स्वाधीनता दिवस भारतीयों ने मनाया है और प्रत्येक आयोजन में राष्ट्रगान अवश्य गाया गया होगा, आयोजनों के अतिरिक्त भी गाया जाता है, गाया गया होगा। भारत के राष्ट्रगान के व सम्मान्य रवीन्द्रनाथ ठाकुर के उक्त समूचे गीत के देवनागरी पाठ के लिए पूरा हिन्दी का नेट खंगालने के उपरांत भी मुझे कहीं भी यह अपने समूचे, सही व शुद्ध रूप में नहीं मिला। हिन्दी विकीपीडिया पर यह अधूरा है व पदों का क्रम भी आगे पीछे है, अन्य भी कुछ लिंक यथासामर्थ्य देखे, तो पाठ में कई मुख्य त्रुटियाँ मिलीं। "मागे" को "माँगे" व "आशिष" को "आशीष" लिखने की त्रुटि तो इतनी सामान्य है कि यदि सुधारने की बात उठे तो लोग "माँगे" के ही पक्ष में तर्क देंगे। इन सारी व्यथाओं से ऊभ-चूभ होते हुए मैंने ठाना कि इसका विधिवत् सम्पूर्ण पाठ व तद्संबंधी मुख्य सभी जानकारियाँ हिन्दी के पाठकों के लिए एक स्थल पर व समग्र रूप में सहेज कर रखीं जानी चाहिए। इस भावना व घंटों की खोजबीन का फल भी निकला, जो इस प्रकार है।

कुल तथ्य यह हैं कि ईस्वी सन १९१३ में साहित्य के नोबल सम्मान से सम्मानित कृति `गीतांजली' में संकलित गीत `जन-गण-मन' की रचना कवीन्द्र रवीन्द्र ने मूलतः बाँग्ला में १९१० के अविभाजित किन्तु परतंत्र भारत में की थी।

मूलतः पाँच पदों वाले इस गीत का पहला पद भारत के राष्ट्रगान के रूप में गाया जाता है।

राष्ट्रगान के रूप में समादृत गीत की धुन को रचा था कैप्टन रामसिंह ठाकुर जी ने।

महात्मा गाँधी के सान्निध्य में कप्तान रामसिंह ठाकुर वायलिन पर राष्ट्रगान की धुन बजा रहे हैं

भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के २७ दिसंबर १९११ के कोलकता अधिवेशन में सर्वप्रथम इसे विधिवत् गाया गया था।

कवीन्द्र रवीन्द्र के स्वर में इसका पाठ भी सुना जा सकता है।

यह तो रही तथ्यों व स्वर तथा धुन की बात। अब ज़रा इसका सही, सम्पूर्ण, शुद्ध व क्रमवार पाठ भी एक-एक कर देखें -

सम्पूर्ण जन-गण-मन (अनुवाद व तीन लिपियों में)

मूल बाँग्ला में पाठ

জনগণমন-অধিনায়ক জয় হে

স্বদেশ --- রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

(১)

জনগণমন-অধিনায়ক জয় হে ভারতভাগ্যবিধাতা!
পঞ্জাব সিন্ধু গুজরাট মরাঠা দ্রাবিড় উৎকল বঙ্গ
বিন্ধ্য হিমাচল যমুনা গঙ্গা উচ্ছলজলধিতরঙ্গ
তব শুভ নামে জাগে, তব শুভ আশিস মাগে,
গাহে তব জয়গাথা।
জনগণমঙ্গলদায়ক জয় হে ভারতভাগ্যবিধাতা!
জয় হে, জয় হে, জয় হে, জয় জয় জয়, জয় হে॥

(২)

অহরহ তব আহ্বান প্রচারিত, শুনি তব উদার বাণী
হিন্দু বৌদ্ধ শিখ জৈন পারসিক মুসলমান খৃস্টানী
পূরব পশ্চিম আসে তব সিংহাসন-পাশে
প্রেমহার হয় গাঁথা।
জনগণ-ঐক্য-বিধায়ক জয় হে ভারতভাগ্যবিধাতা!
জয় হে, জয় হে, জয় হে, জয় জয় জয়, জয় হে॥

(৩)

পতন-অভ্যুদয়-বন্ধুর পন্থা, যুগ-যুগ ধাবিত যাত্রী।
হে চিরসারথি, তব রথচক্রে মুখরিত পথ দিনরাত্রি।
দারুণ বিপ্লব-মাঝে তব শঙ্খধ্বনি বাজে
সঙ্কটদুঃখত্রাতা।
জনগণপথপরিচায়ক জয় হে ভারতভাগ্যবিধাতা!
জয় হে, জয় হে, জয় হে, জয় জয় জয়, জয় হে॥

(৪)

ঘোরতিমিরঘন নিবিড় নিশীথে পীড়িত মূর্ছিত দেশে
জাগ্রত ছিল তব অবিচল মঙ্গল নতনয়নে অনিমেষে।
দুঃস্বপ্নে আতঙ্কে রক্ষা করিলে অঙ্কে
স্নেহময়ী তুমি মাতা।
জনগণদুঃখত্রায়ক জয় হে ভারতভাগ্যবিধাতা!
জয় হে, জয় হে, জয় হে, জয় জয় জয়, জয় হে॥

(৫)

রাত্রি প্রভাতিল, উদিল রবিচ্ছবি পূর্ব-উদয়গিরিভালে--
গাহে বিহঙ্গম, পুণ্য সমীরণ নবজীবনরস ঢালে
তব করুণারুণরাগে নিদ্রিত ভারত জাগে
তব চরণে নত মাথা
জয় জয় জয় হে, জয়রাজেশ্বর ভারতভাগ্যবিধাতা
জয় হে, জয় হে, জয় হে, জয় জয় জয়, জয় হে॥

सम्पूर्ण जन-गण-मन (अनुवाद व तीन लिपियों में)

बाँग्ला के पाठ का रोमन लिप्यन्तरण व अंग्रेजी रूपांतर

अंग्रेजी अनुवाद : श्री सितांशु शेखर मित्र (साभार)

(1)	
Jano Gano Mano Adhinaayako Jayo Hey	Oh! the ruler of the mind of the people,
Bhaarato Bhaagyo Bidhaataa	Victory be to You, dispenser of the destiny of India!
Panjaabo Sindhu Gujaraato Maraathaa	Punjab, Sind, Gujrat, Maharastra,
Draabirho Utkalo Bango	Drabir (South India), Orissa, and Bengal,
Bindhyo Himaachalo Jamunaa Gangaa	the Bindhya, the Himalayas, the Jamuna, the Ganges,
Uchchhalo Jalodhi Tarango	and the oceans with foaming waves all around
Tabo Shubho Naamey Jaagey	Wake up listening to Your auspicious name,
Tabo Shubho Aashisho Maagey	ask for Your auspicious blessings,
Gaahey Tabo Jayogaathaa	And sing to Your glorious victory.
Jano Gano Mangalo Daayako	Oh! You who impart well being to the people!
Jayo Hey Bhaarato Bhaagyo Bidhaataa	Victory be to You, dispenser of the destiny of India!
Jayo Hey, Jayo Hey, Jayo Hey,	Victory, victory, victory to Thee!
Jayo Jayo Jayo Jayo Hey	(refrain repeated five times)

(2)	
Aharaho Tabo Awhbaano Prachaarito	Your call is announced continuously,
Shuni Tabo Udaaro Baani	we heed Your gracious call.
Hindu Bauddho Shikho Jaino	The Hindus, Buddhists, Sikhs, Jains,
Parashiko Musholmaano Christaani	Muslims, and Christians,
Purabo Pashchimo Aashey	The East and the West come
Tabo Singhaasano Paashey	to the side of Your throne
Premohaaro Hawye Gaanthaa	And weave the garland of love.
Jano Gano Oikyo Bidhaayako Jayo Hey	Oh! You who bring in the unity of the people!
Bhaarato Bhaagyo Bidhaataa	Victory be to You, dispenser of the destiny of India!
Jayo Hey, Jayo Hey, Jayo Hey,	Victory, victory, victory to Thee!
Jayo Jayo Jayo, Jayo Hey	(refrain repeated five times)

सम्पूर्ण जन-गण-मन (अनुवाद व तीन लिपियों में)

(3)	
Patano Abhyudayo Bandhuro Panthaa	The way of life is somber as it moves through ups and downs.
Jugo Jugo Dhaabito Jaatri	But we, the pilgrims, have followed through ages.
Hey Chiro Saarothi, Tabo Ratha Chakrey	Oh! Eternal Charioteer, the wheels of your chariot
Mukharito Patho Dino Raatri	echo day and night in the path
Daaruno Biplabo Maajhey	In the midst of fierce revolution
Tabo Shankhodhwoni Bajey	your conch shell sounds.
Sankato Duhkho Traataa	You save us from fear and misery.
Jano Gano Patho Parichaayako	Oh! You who guide the people through tortuous path!
Jayo Hey Bhaarato Bhaagyo Bidhaataa	Victory be to You, dispenser of the destiny of India!
Jayo Hey, Jayo Hey, Jayo Hey,	Victory, victory, victory to Thee!
Jayo Jayo Jayo, Jayo Hey	(refrain repeated five times)
(4)	
Ghoro Timiro Ghono Nibiro	During the bleakest of nights,
Nishithey Pirhito Murchhito Deshey	when the whole country was sick and in swoon
Jagrato Chhilo Tabo Abichalo Mangalo	Wakeful remained Your incessant blessings
Nato Nayoney Animeshey	through Your lowered but winkless eyes.
Duhswapney Aatankey	Through nightmares and fears
Rakkhaa Koriley Ankey	You protected us on Your lap
Snehamoyi Tumi Maataa	Oh Loving Mother.
Jano Gano Duhkho Trayako	Oh! You who have removed the misery of the people!
Jayo Hey Bhaarato Bhaagyo Bidhaataa	Victory be to You, dispenser of the destiny of India!
Jayo Hey, Jayo Hey, Jayo Hey,	Victory, victory, victory to Thee!
Jayo Jayo Jayo, Jayo Hey	(refrain repeated five times)
(5)	
Raatri Prabhatilo Udilo Rabichhabi	The night is over, and the Sun has risen
Purbo Udayo Giri Bhaaley	over the eastern horizon.
Gaahey Bihangamo Punyo Samirano	The birds are singing, and a gentle auspicious breeze
Nabo Jibano Rasho Dhaley	is pouring the elixir of new life.
Tabo Karunaaruno Ragey	By the halo of Your compassion
Nidrito Bhaarato Jagey	India that was asleep is now waking
Jayo Jayo Jayo Hey, Jayo Rajeshwaro	Victory be to You, the Supreme King!
Bhaarato Bhaagyo Bidhaataa	dispenser of the destiny of India!
Jayo Hey, Jayo Hey, Jayo Hey,	Victory, victory, victory to Thee!
Jayo Jayo Jayo, Jayo Hey	(refrain repeated five times)

सम्पूर्ण जन-गण-मन (अनुवाद व तीन लिपियों में)

देवनागरी पाठ

(१)

जन गण मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
पंजाब सिन्ध गुजरात मराठा
द्रविड़ उत्कल बंग
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा
जन गण मंगल दायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
जय हे जय हे जय हे
जय जय जय जय हे

(२)

अहरह तव आह्वान प्रसारित,
सुनि तव उदार वानी
हिन्दू बौद्ध सिख जैन पारसि
मुसलमान क्रिस्तानी
पूरब पच्छिम आसे,
तव सिंहासन पासे
संकट दु:ख त्राता
जन गण ऐक्य विधायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
जय हे जय हे जय हे,
जय जय जय जय हे

(३)

पतन-अभ्युदय-वन्धुर-पंथा,
युगयुग धावित यात्री,
हे चिर-सारथी,
तव रथ चक्रेमुखरित पथ दिन-रात्रि
दारुण विप्लव-माझे
तव शंखध्वनि बाजे,
संकट-दुख-श्राता,
जन-गण-पथ-परिचायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता,
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे

(४)

घोर-तिमिर-घन-निविङ-निशीथ
पीङित मुर्च्छित-देशे
जाग्रत दिल तव अविचल मंगल
नत नत-नयने अनिमेष
दुस्वप्ने आतंके
रक्षा करिजे अंके
स्नेहमयी तुमि माता,
जन-गण-दुखत्रायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता,
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे

(५)

रात्रि प्रभातिल उदिल रविच्छवि
पूरब-उदय-गिरि-भाले,
साहे विहन्गम, पूण्य समीरण
नव-जीवन-रस ढाले,
तव करुणारुण-रागे
निद्रित भारत जागे
तव चरणे नत माथा,
जय जय जय हे, जय राजेश्वर,
भारत-भाग्य-विधाता,
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे

आशा है, इस सँजो कर रखी जाने वाली सामग्री का सदुपयोग आप राष्ट्रगान के प्रति बरती जानेवाली अतिरिक्त सतर्कता के साथ (व रचनाकार तथा राष्ट्र के प्रति) ससम्मान करेंगे एवं भविष्य में इसके पाठ व उच्चारण संबंधी त्रुटियों के विरोध में सर्वदा सतर्क रहेंगे।

जय भारत

यह देश आज़ाद कहाँ है?

देवेन्द्र गोरे

१९४७ को देश आज़ाद हुआ है,
धन्य हो गए जिन्होंने आज़ाद किया है,
पर जंग तो आज भी जारी है,
यह देश आज़ाद कहाँ है?

नेता तो आते जाते हैं,
प्रसिद्धी पा चले जाते हैं ,
युवाओं का मौका छीन लेते हैं,
यह देश आज़ाद कहाँ है?

कानून तो ढेर बने हैं,
सजा तो कुछ ही पा सके हैं,
गुनाह तो और बढ़ रहे हैं,
यह देश आज़ाद कहाँ है?

प्रतिभा तो बहुत हैं इस देश में,
पर पैसों की कमी है,
गरीबी तो देश में छाई है,
फिर ये देश आज़ाद कहाँ है?
मंहगाई इस कदर है देश में,
गरीब के लिए छत तक नहीं है,
सरकार गरीबों का नहीं,
अमीरों का सोचती है,
यह देश आज़ाद कहाँ है?

स्वर्ग प्रदेश (जम्मू) में जाना आसान है,
जिनकी वजह से हम जा पाते हैं,
हम उन्हें ही भूल जाते हैं,
नम हैं आँखें उन शहीदों के लिए,
जिनकी वजह से हम आज़ाद हैं!

जय हिंद!

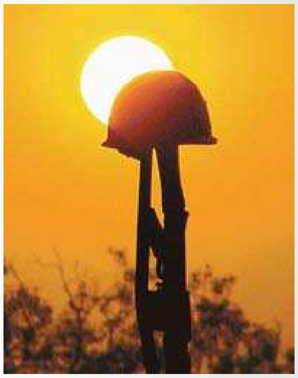

स्वामी दयानन्द सरस्वती

एक आदर्श व्यक्तित्व

रामेश्वर काम्बोज
'हिमांशु'

गाँधी जी ने कहा था- "महर्षि दयानन्द भारत के आधुनिक ऋषियों, सुधारकों, श्रेष्ठ पुरुषों में से एक थे। उनके ब्रह्मचर्य, विचार-स्वतंत्रता, सबके प्रति प्रेम, कार्य कुशलता आदि गुण लोगों को मुग्ध करते हैं। उनके जीवन का प्रभाव भारत पर बहुत पड़ा है। मैं जैसे-जैसे प्रगति करता हूँ, वैसे-वैसे मुझे महर्षि जी का बताया मार्ग दिखाई देता है।" सरदार पटेल ने कहा - ''यदि स्वामी जी न होते तो हिन्दुस्तान की क्या हालत होती, इसकी कल्पना भी कठिन थी।''

ऐसे महापुरुष का जन्म काठियावाड़ प्रदेश के मौरवी राज्य के अन्तर्गत टंकारा नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता करसन जी त्रिवेदी तहसीलदार थे। इनका नाम रखा गया मूलशंकर। मूलशंकर के दो भाई एवं एक बहिन अल्पावस्था में ही काल कवलित हो गए।

उन्नीसवीं सदी का यह वह समय था जब छोटे-छोटे क्षेत्रों के राजा विलासितापूर्ण जीवन में डूबे हुए थे। छुआछूत, ऊँच-नीच, पाखण्ड एवं आडम्बर भारतीय समाज को खोखला बना रहे थे। अशिक्षा बालविवाह नारी के प्रति उपेक्षा चरम सीमा पर थी। अंग्रेज अपने हथकण्डों से भारत को खोखला बना रहे थे।

आठ वर्ष की अवस्था में मूलशंकर का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। बाल मूलशंकर इतने कुशाग्रबुद्धि थे कि इन्होंने अल्प समय में ही गायत्री सन्ध्या रुद्री आदि कंठस्थ कर ली। १४ वर्ष की अवस्था तक व्याकरण -ज्ञान के साथ यजुर्वेद संहिता भी कंठस्थ कर ली थी।

शिवरात्रि का पर्व १४ वर्षीय मूलशंकर के जीवन में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लेकर आया। इन्हें उपवास एवं रात्रि जागरण के लिए तैयार किया गया। मन्दिर में पूजा अर्चना के बाद सब लोग रात्रि-जागरण के लिए बैठ गए। ज्यों-ज्यों रात्रि बीतने लगी भक्त एक-एक करके निद्रा में डूबने लगे। पुजारी भी सो गए। मूलशंकर की आँखों से नींद कोसों दूर थी। वह अकेला जगा हुआ था। इसी बीच अपने बिलों से बाहर आकर चूहे सन्नाटा भंग करने लगे। वे शिवलिंग के आस-पास उत्पात मचाने लगे एवं प्रसाद की सामग्री खाने लगे। मूलशंकर चौंका, सच्चा शिव कोई और ही है। जो अपने ऊपर उछलकूद करने वाले चूहों को नहीं रोक सकता, वह सच्चा शिव नहीं हो सकता। मूलशंकर ने पिता को जगाया और अपने मन की शंका बताई। पिताजी समुचित उत्तर देकर मूलशंकर को सन्तुष्ट न कर सके।

जीवन-जगत के उत्तेजक और अनुतरित प्रश्न अधिकतम महापुरुषों के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए हैं। जब मूलशंकर १६ वर्ष के थे तभी इनकी छोटी बहिन हैजे से चल बसी। मृत्यु की यह

स्वामी दयानन्द सरस्वती

घटना इस बालक के कोमल मन में वैराग्य के बीज बो गई। तीन वर्ष बाद इनके विद्वान चाचा की भी हैजे से मृत्यु हो गई। चाचा से इनका बहुत लगाव था। यह मृत्यु इनके लिए बहुत बड़ा आघात थी। मृत्यु के इस शाश्वत प्रश्न का इन्हें कोई समाधान नहीं मिला।

मूलशंकर २१ वर्ष के हो गए थे। इनका वैराग्य माता-पिता से छुपा न था। इनका विवाह करने की बात सोची। विवाह की बात सुनकर ये घर से भाग निकले। रास्ते में ठग साधुओं ने इनके वस्त्राभूषण भी ठग लिये। इधर-उधर भटकने के बाद ये सायला ग्राम के लाला भक्त नामक सन्त के आश्रम में पहुँचे। वहाँ इन्होंने ब्रह्मचर्य का व्रत लिया और योगाम्यास भी शुरू कर दिया। लाला भक्त ने इनका नाम 'शुद्ध चैतन्य' रख दिया। जिज्ञासा शान्त न होने पर ये यहाँ से चल दिए और कोट काँगडा़ पहुँचे। साधु-सन्तों के वेश में बहुत से धूर्त साधु भी इन्हें मिले। इससे इनका मन उद्वेलित हो उठा। ये सिद्धपुर के मेले में चले गए। इनके पिता के परिचित वैरागी ने इनको पहचान लिया और इनके पिता को चिट्ठी लिख दी। वे सिपाहियों के साथ सिद्धपुर आ पहुँचे और इनको साथ ले लिया। रात्रि विश्राम के समय जब सब सो गए तो ये चुपचाप भाग निकले।

घूमते-भटकते ये नर्मदा के तट पर जा पहुँचे जहाँ इनकी भेंट स्वामी पूर्णानन्द से हुई। बहुत आग्रह करने पर पूर्णानन्द जी ने इनको संन्यास की दीक्षा दी और नाम रखा स्वामी दयानन्द सरस्वती। स्वामी पूर्णानन्द जी द्वारका की ओर चले गए। दयानन्दजी ने वहीं रहकर स्वामी योगानन्द जी से योग-विद्या सीखी, इसके बाद दयानन्द जी छिनूर चले गए और वहाँ पं. कृष्ण शास्त्री से व्याकरण पढ़ा। विभिन्न स्थानों पर घूमते हुए आप हरिद्वार पहुँचे। हरिद्वार में चण्डीपर्वत पर इन्होंने योगसाधना शुरू कर दी। हरिद्वार में एवं पुजारियों के आडम्बर को निकट से देखा। व से अन्य साधुओं के साथ ऋषिकेश, टिहरी, श्रीनगर, रुद्रप्रयाग, केदारनाथ गौरीकुण्ड आदि अनेक स्थानों पर होते हुए अलकनन्दा तक जा पहुँचे। विभिन्न स्थानों पर भ्रमण करते, कुछ न कुछ सीखते हुए आप नवम्बर १८६० में दण्डीस्वामी बिरजानन्द के पास मथुरा पहुँचे लगभग ढाई वर्ष तक गुरु के चरणों में बैठकर अष्टाध्यायी महाभाष्य आदि अनेक शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। गुरुदक्षिणा देने के आग्रह पर दण्डी स्वामी बिरजानन्द ने कहा- "शिष्य, मैं तुमसे वही वस्तु चाहता हूँ जो तुम्हारे पास है। जाओ देश का उपकार करो, सत् शास्त्रों का उद्धार करो, मत-मतान्तरों के अन्धकार को मिटाओ।"

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने निश्चय किया कि जो पाखण्ड एवं आडम्बरों का पोषण कर रहे हैं, उनका मुकाबला करेंगे एवं जड़ता से मुक्त करके देश में स्वस्थ चिन्तन-धारा प्रवाहित करेंगे। इन्होंने पूरे देश में भ्रमण किया। आगरा धौलपुर-ग्वालियर होते हुए पुष्कर मेले में पहुँचे। जहाँ भी पाखण्ड एवं आडम्बर फैलाने वाले तथाकथित मठाधीश मिले, ये वहीं जा पहुँचे और उन्हें शास्त्रार्थ में पराजित किया। इन्होंने जयपुर, अजमेर, कर्णवास, रामघाट, सोरों, कायमगंज, फरुखाबाद, कन्नौज, कानपुर, बनारस, मिर्जापुर, आगरा, कलकत्ता, छपरा, डुमराओं, प्रयाग, बम्बई, भड़ौंच, राजकोट, अहमदाबाद, लखनऊ, मुरादाबाद, अम्बेहटा, चॉदापुर, लाहौर, अमृतसर, गुरदासपुर, जालन्धर, फिरोजपुर, रावलपिंडी, मुल्तान रुड़की, मेरठ, रिवाड़ी, बदायूँ, बरेली, दानापुर, मुजफ्फरनगर, आगरा, मसूदा, शाहपुरा, उदयपुर जोधपुर आदि स्थानों पर शास्त्रार्थ किए एवं विभिन्न

स्वामी दयानन्द सरस्वती

मत-मतान्तरों के मानने वालों के सामने धर्म के सत्य स्वरूप को स्थापित किया। कर्नल ब्रुक ने कहा था - "हमने जीवन में ऐसा संस्कृत का विद्वान नहीं देखा।"

ब्रहम समाज के बाबू केशवचन्द्र सेन के आग्रह पर ये कलकत्ता गए। वहाँ विद्वानों से इनका विचार-विमर्श हुआ। केशवचन्द्र सेन के परामर्श से इन्होंने अपना प्रवचन जनभाषा हिन्दी में देना शुरू किया। इससे पूर्व में संस्कृत में ही प्रवचन करने थे।

इनके तर्कों के सामने निरुत्तर होने पर कुछ अराजक एवं स्वार्थी तत्वों ने इनको मारने का प्रयास किया कर्णवास में करौली के रईस कर्णसिंह ने तलवार से इन पर हमला करने का प्रयास किया। दयानन्द जी ने इनके हाथ से तलवार छीनकर उसके दो टुकड़े कर दिए। अनूपशहर में एक ब्राह्मण ने प्रेमपूर्वक पान का वीड़ा दयानन्द जी को दिया जिसमें जहर मिला हुआ था। जहर का आभास होते ही न्यौली क्रिया द्वारा इन्होंने जहर शरीर से बाहर निकाल दिया। तहसीलदार सैयद मुहम्मद ने उस ब्राह्मण को गिरफ्तार कर लिया। स्वामीजी ने कहा- "इसे मुक्त कर दो। मैं संसार को कैद कराने नहीं, कैद से मुक्त कराने आया हूँ।"

प्रयाग में स्वामी जी के विरोधियों ने मिठाई में विष मिलाकर देना चाहा। स्वामीजी ने एक टुकड़ा खुद लेकर लाने वाले को मिठाई खाने के लिए दिया तो वह थर-थर काँपने लगा। लोगों ने उसे पुलिस के हवाले करना चाहा परन्तु स्वामी जी ने मनाकर दिया।

समाज को नियमबद्ध रूप देने के लिए १० अप्रैल १८७५ को मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की गई। आर्य समाज के २८ नियम बनाए गए। बाद में कुछ परिवर्तन करके २४ जून १८७७ ई. में लाहौर में १० नियम बनाए गए जो आज तक प्रचलित हैं। दयानन्द जी ने आर्यसमाज में एक सहायक के रूप में ही रहना स्वीकार किया ये 'गुरुडम' प्रथा के विरुद्ध थे? अत: किसी प्रकार का गुरुपद स्वीकार करने से मना कर दिया। आर्यसमाज के इन नियमों में वेद का अध्ययन करना सत्य मार्ग पर चलना, संसार का उपकार करना, सब काम धर्मानुसार करना, सबसे प्रीतिपूर्वक व्यवहार, अविद्या का नाश एवं विद्या का प्रचार, सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझना, सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में स्वतंत्र रहना आदि प्रमुख हैं।

दयानन्द जी ने विभिन्न ग्रन्थों की रचना की जिनमें सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि एवं ऋग्वेदिभाष्य भूमिका प्रमुख हैं। सत्यार्थ प्रकाश के १४ समुल्लासों में जीवनचर्या एवं विभिन्न मतमतान्तरों का गठन एवं तार्किक अध्ययन प्रस्तुत किया है। इसमें प्रश्नोत्तर शैली का रोचक प्रयोग करके दुरुह विषय को भी सर्वग्राहय बना दिया है। स्वामीजी ने अल्पायु में विवाह का निषेध एवं विधवा-विवाह का समर्थन किया है तृतीय समुल्लास में दयानन्द जी ने विभिन्न उदाहरणों द्वारा प्रमाणित किया है कि वेद पढ़ने का अधिकार सभी-स्त्री पुरुषों को है, चाहे वे किसी भी वर्ण के हों। संस्कार विधि में विभिन्न संस्कारों की विधि आदि का विस्तृत एवं शास्त्रीय उल्लेख किया गया है।

ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका चारों वेदों के तात्विक अर्थ को समझने के लिए एक अद्भुत ग्रंथ है। इस ग्रन्थ में स्वामीजी ने ५७ विभिन्न विषयों पर तार्किक एवं शास्त्रीय पक्ष प्रस्तुत करके वेद विषयक विभिन्न भ्रांत धारणाओं को धराशायी किया।
महीधर ,उव्वट,सायण जैसे भाष्यकारों ने वेदों की जो गलत व्याख्याएँ की थीं,

शेष पृष्ठ ३३ पर...

मेरा अनुभव

नूतन लाल

पिस्कैटवे हिंदी पाठशाला को खुले हुए २ वर्ष ही हुए हैं, लेकिन इन दो वर्षों में छात्र एवं छात्राओं की संख्या दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही है। इस पाठशाला में लगभग ११५ छात्र एवं छात्राएँ हैं। १५ शिक्षिकाएँ एवं ३ स्वयंसेवक निःस्वार्थ भाव से इस कार्य में लगे हुए हैं। बर्फ, तेज बारिश एवं ठंडी हवाओं में भी छात्र एवं छात्राएँ प्रत्येक शुक्रवार को उपस्थित होते हैं। बच्चो में हिंदी के प्रति इतना लगाव देखकर बहुत ही अच्छा लगता है।

जनवरी महीने में पाठशाला में कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। उस दिन का दृश्य तो देखने लायक था। पाँच साल से लेकर पंद्रह साल के बच्चों ने इस कविता पाठ में भाग लिया। बच्चों ने तितली, परी, जोकर, भारत माता बनकर एवं अपनी कविता के अनुरूप कपड़े पहन कर, अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। थोड़ी देर के लिए तो मैं अचंभित हो गई, कि मैं अमेरिका में हूँ, या भारत में। पाठशाला का वातावरण भारतमय हो गया था। बच्चों एवं उनके अभिभावकों में हिंदी के प्रति स्नेह, लगाव एवं उत्सुकता देखने को मिली। बच्चे तो उत्साहित थे ही, साथ ही साथ अभिभावक भी बहुत उत्साहित दिख रहे थे।

हिंदी यू.एस.ए. के कारण, जितने यहाँ के बच्चे हिंदी के प्रति जागरुक हो गए हैं, उतना तो भारतीय बच्चे भी जागरुक नहीं हैं। हिंदी यू.एस.ए. अमेरिका में बसे भारतीयों के लिए, हिंदी से जुड़ने का एक बहुत ही सरल माध्यम बन गया है।

पिस्कैटवे हिंदी पाठशाला में बहुत से ऐसे बच्चे हैं, जिनके माता-पिता को हिंदी बिल्कुल नहीं आती है, परन्तु वे अपने बच्चों को हिंदी पाठशाला में भेज रहे हैं, ताकि उनके बच्चे हिंदी सीखें और भविष्य में उनको किसी भी परेशानी का सामना न करना पड़े।

मैं पिस्कैटवे हिंदी पाठशाला की संचालिका एवं शिक्षिका के साथ-साथ फ्रेंकलिन हाई स्कूल में हिंदी भाषा की शिक्षिका भी हूँ। फ्रेंकलिन हाई स्कूल में हिंदी सत्र २००९-२०१० से प्रारम्भ हुआ। मेरी कक्षा में ९-१२ वर्ष के छात्र-छात्राएँ हैं। मैंने अपने हाई स्कूल में इस साल होली मनाई। होली के दिन मैं रंग-बिरंगे गुलाल एवं नाश्ते के लिए समोसा एवं काजू कतली ले गयी थी। जब अन्य कक्षाओं को होली के बारे में पता चला तो वे लोग भी मेरी कक्षा में आ गए। अभारतीय छात्र गुलाल देखकर बहुत खुश हुए। पहले तो मैंने उन्हें, होली क्यों मनाई जाती है, बताया। उन लोगों ने होली की वीडियो क्लिप भी देखी। छात्र उत्सुक थे, कि कब उन्हें गुलाल लगाने को मिलेगा, व वीडियो क्लिप समाप्त होते ही वे एक दूसरे के चेहरों पर रंग-बिरंगा गुलाल लगाएँगे और फिर समोसा, काजू कतली खाएँगे। कक्षा समाप्त होने के बाद वे लोग वापिस अपनी कक्षा में चले गए। उन्हें होली के बारे में जानकर, बहुत ही आनन्द आया। अभारतीय छात्र-छात्राएँ हिंदी सीखने के लिए बहुत ही उत्साहित दिखे। उन्हें हिंदी फिल्म देखना, भारतीय भोजन खाना, भारतीय त्योहार मनाना, बहुत पसंद आता है।

फ़रवरी महिने में, मैं ACTFL OPI टेस्टर ट्रेनिंग के लिए NYU गयी थी, वहाँ मेरे साथ ट्रेनिंग में, University of Texas at Austin, के हिंदी के

शेष पृष्ठ २९ पर...

लोक साहित्य का मर्म

विद्यावती पाण्डेय और रचना श्रीवास्तव

अवधी अवध में बोली जाने वाली बोली है। इसका साहित्य अत्यंत समृद्ध है अतः इसको भाषा का दर्जा देना गलत न होगा। पूर्वी अवधी और पश्चिम अवधी के रुप में ये करीब लाखों लोगों के द्वारा बोली जाती है। अवधी साहित्य भी बहुत समृद्ध है। तुलसीदास द्वारा रचित रामचरित मानस, जायसी कृत पद्मावत अवधी भाषा में हैं। इसके अलावा संत कवियों में बाबा मलूकदास, इनके शिष्य बाबा मथुरादास की बानी अवधी में हैं। अवधी के लोकगीत भी बहुत प्रचलित हैं। लोकगीत क्या है? महात्मा गाँधी जी ने कहा था कि लोकगीत समूची संस्कृति के पहरेदार हैं और लोकगीत का शाब्दिक अर्थ है जनमानस का गीत, जन-मन का गीत, जनमानस की आत्मा में रचा बसा गीत। जनकंठ में ये सुरक्षित रहते हैं और पीढ़ी-दर-पीढ़ी विरासत में मिलते हैं। अपने मन के भावों को जब आम जनता गीतों का रूप देती है तो लोग गीत का जन्म होता है। लोकगीतों में भारतीय संस्कृत की गंध रची बसी होती है लोकगीतों में स्थानीय शब्दों का समावेश प्रचुरता में होता है। यदि अवधी के लोकगीतों को देखें तो इसमें भक्ति, श्रृंगार, वात्सल्य रसों का सुंदर चित्रण है। अन्य लोकगीतों कि तरह अवधी के लोकगीतों में भी भारतीय संस्कृति का दर्पण है। जीवन के हर पहलू पर अवधी लोकगीत लिखे गयें हैं। बच्चे के जन्म पर गाए जाने वाले सोहर से ले कर प्रत्येक मौसम त्योहार और जीवन के विभिन कर्मकांडों पर अवधी में लोकगीत मिल जाएँगे।

मचियाह बैठी है सासू, तो बहुरिया अरजी करे
सासू निबिया पूजें हम जाबे ओबेरिया हमरे गमके

मिली जुली गावे के बधइया, बधइया गाव सोहर हो
आज किशन के होइहे जनमवा, जगत गाई सोहर हो॥

जुग जुग जिये ललनवा के महलवा के भाग जगे
आँगन होई गए ललनवा के महलवा के भाग जगे

लड़के के जन्म पर बहुत खुशियाँ मनाई जाती हैं। ये देख कर लड़की अपने पिता से पूछती है।

हमरे जनम कहे थरिया न बजायो
कहे न मनायो खुशियाँ हो
बेटी जनम जे मुख कुम्हलाये
बिगड़े भाग्य रमैया हो

मुंडन एक महत्त्वपूर्ण संस्कार है। बच्चे के जन्म के कुछ सालों बाद या साल भीतर ही मुंडन होता है। इस अवसर का गीत है, जिसमें भाई अपनी बहन को निमंत्रण देता है और कहता है कि बहन तुम्हारे भतीजे का मुंडन है, तुम्हें न्यौता है तुम आना जरूर

भैया जे बहिनी से अरजि करें
बहिनी आज तोहरे भतीजवा के मुंड़न,
न्यूत हमरे आयो जरूर
बहिनी जे भइया से अरजी करे
भइया बडरे कलाप के लपडिया तो,
चोरिया मुडायो जनेऊ (उपनयन संस्कार)

मुंडन हमारी संस्कृति का एक विशेष अवसर है। माना जाता है कि इसके बाद बालक पढ़ने के लिए गुरुकुल जाते थे।

लोक साहित्य का मर्म

दशरथ के चारो ललनवा मण्डप पर सोहे (2)
कहा सोहे मुन्ज के डोरी, कहा सोहे मृग छाला
कहा सोहे पियरी जनेऊवा, मण्डप पर सोहे
दशरथ के चारो ललनवा, मण्डप पर सोहे
हाथ सोहे मुंज के डोरी, कमर म्रिगछाला
देह सोहे पियरी जनेऊवा, मण्डप पर सोहे

राम के वन जाने पर माता कौशल्या सोच रही है कि राम-लक्ष्मण जंगल में रहेंगे कहाँ-

कौन गाछतर आसन वासन कौन गाछतर डेरा

फिर उत्तर स्वयं ही सोचकर थोड़ा आश्वस्त होती हैं:

कदम गाछतर आसन-वासन, नीम गाछतर डेरा।

भारतीय संस्कृति के चार आश्रमों में से एक है गृहस्थ आश्रम। गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने के लिये विवाह का होना अनिवार्य था, विवाह में बहुत सी रीतियाँ होती थीं; आज भी होती हैं, पर समय की कमी के कारण कुछ कम होती हैं। जैसे- देखिए विवाह योग्य बेटी अपने पिता से कहती है – मैं बहुत सुंदर हूँ। मेरे लायक ही वर खोजना और मेरा विवाह करना।

मेरा अनुभव... (पृष्ठ २७ से आगे)

प्रोफेसर जिष्णु शंकर जी एवं Syracuse University के हिंदी के प्रोफेसर आनंद द्विवेदी जी थे। बातचीत के दौरान जिष्णु जी ने मुझे बताया कि ऑस्टिन के हिंदी-उर्दू फ्लैगशिप कार्यक्रम में हम सदा मेधावी छात्रों की खोज में रहते हैं। इस ध्येय से,
यदि हमारे संस्थान के बारे में जानकारी हाईस्कूलों तक पहुँच जाये तो शायद बच्चों को आगे हिंदी-उर्दू पढ़ने का निर्णय लेने में सहायता मिले। जिष्णु शंकर जी ने इससे सम्बंधित कुछ सामग्री, डाक के जरिये मुझे भेजी है, हाई स्कूल के छात्रों को देने के लिए।

आज अमेरिका में हिंदी की अपनी अलग से पहचान बन रही है। सुरक्षा एवं कई अन्य कारणों से अमेरिकी सरकार हिंदी को बढ़ावा दे रही है। अगर बच्चे हाई स्कूल में हिंदी लेते है, तो उन्हें हर साल पाँच क्रेडिट मिलते हैं, जो कि भविष्य के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होंगे। आनेवाले दिनों में बहुत सी सरकारी नौकरियों में हिंदी में क्रेडिट वालों को नौकरी मिलेगी। मुझे याद है, जब मुझे केवल चार क्रेडिट के लिए Rutger's University में हजारों डालर्स खर्च करने पड़े थे, परन्तु अब यह क्रेडिट हाई स्कूल में हिंदी लेने से ही मिल रहे हैं। मेरा अभिभावकों से आग्रह है, कि वे अपने बच्चों को हाई स्कूल में, हिंदी भाषा को ऐच्छिक विषय के रूप में चुनने में सहायता करें जिससे हिंदी भाषा अमेरिका में और आगे बढ़ सके।

माँ की ममता

सविता नायक

सविता जी ने हिन्दी में M.A. किया है। ये विश्व भाषा हिन्दी की प्रमाणित शिक्षिका (certified teacher) हैं और इन्होंने न्यू यॉर्क विश्वविद्यालय से 'स्टारटॉक शिक्षक प्रशिक्षण' भी पाया है। ये पिछले तीन वर्षों से 'हिन्दी यू.एस.ए' में बच्चों को हिन्दी पढ़ा रहीं हैं और वहाँ से इनको प्रथमा-2 स्तर की संचालिका और कर्मभूमि पत्रिका में शुद्धिकरण कार्य में योगदान का भी अनुभव है। ये ACTFL से OPI 'टेस्टर सर्टिफिकेशन' कर रहीं हैं। इन्होंने स्टारटॉक के कई कार्यक्रमों में स्कूल एवं कॉलेज के छात्रों को पढ़ाया है। इनको न्यू यॉर्क के सिटी कॉलेज में पढ़ाने का भी अनुभव है।

मई के महीने में 'मदर डे' आता है। सोचती हूँ कि बहुत वर्ष पहले तो ऐसा नहीं था, माँ को याद करने या धन्यवाद कहने के लिए कोई दिन निश्चित नहीं किया गया था। तब आसान लगता था। अब तो सोच में पड़ जाती हूँ कि इस दिन अलग से कुछ विशेष क्या करूँ? मेरी माँ अब अस्सी वर्ष की हो चुकी हैं। बहुत बूढ़ी और कमज़ोर हो गई हैं और उनकी स्मरणशक्ति भी कम हो रही है। लेकिन कुछ वर्ष पहले जब उनको सब अच्छे से याद रहता था तब भी 'मदर डे' पर उनके लिए कुछ अलग से क्या करूँ,' यह बात कुछ मुश्किल ही लगती थी। फिर सोचती हूँ कि अब तो मेरे स्वयं के बच्चे बड़े हो गए हैं, क्या उन्हें भी यह मुश्किल आती होगी? यह नई पीढ़ी इस दिन माँ के बारे में क्या विशेष सोचती या करती होगी?

हमारा परिवार पिछले १३-१४ वर्षों से अमेरिका में रह रहा है और मेरी माँ भाई के पास भारत में रहती हैं। उन्हें तो मालूम भी नहीं पड़ता कि 'मदर डे' जैसा कोई विशेष दिन भी होता है। जवाहर लाल नेहरु जी के जन्मदिन से जुड़ा 'बाल दिवस' मनाया जाता है, बस 'दिवस' के नाम पर उनको उतना मालूम है। और मालूम भी क्यों न होगा, मेरी माँ भी उन लाखों-करोड़ों लोगों जैसी हैं जो अपने देश के प्रिय संत, नेता, अभिनेता, क्रिकेटर, 'विख्यात लोगों से जुड़ी हुई विशेष बातें' या 'आम लोगों से जुड़ी खास बातों' को बहुत मानते हैं। यह सब जानते हुए भी मुझे इस बात का आभास है कि माँ को इस दिन की विशेषता बताना चाहूँगी तो उनको कुछ विशेष उत्साह नहीं होने वाला। वो तो बस मैं अपने मन के संतोष के लिए उन्हें इस दिवस की विशेषता बताए बिना और दिनों की भांति फोन पर बात करके खुश हो लेती हूँ। लेकिन ऐसा भी नहीं है कि मैंने कभी उनको बताने का प्रयास नहीं किया। पहली बार जब मैंने इस दिवस पर उनको अमेरिका से फोन करके बताया कि 'आज मदर डे है' तो उन्होंने आज्ञाकारी बच्चे की तरह अपने ही विश्वास की धुन में बिना बात पर ध्यान दिए कहा था 'अच्छा' जैसे कोई खास बात न हो! यूं तो उनसे हर सप्ताह फोन पर बात करती हूँ, सोचती हूँ हर बार की तरह इस बार भी इस विशेष दिन पर उनसे फोन पर बात करुँगी। मुझे याद है कि एक बार माँ से बात की और तब ध्यान

माँ की ममता

में नहीं आया कि एक दिन बाद ही ‘मदर डे’ है! और फिर एक दिन पश्चात इस विशेष दिन के आने पर असमंजस में पड़ गई कि क्या फिर से फोन करूँ? माँ हैरान होंगी कि सब ठीक तो है? बस यही सोचकर इतना विशेष दिन होने पर भी उस दिन माँ से बात नहीं की थी।

हम प्रवासी लोग बीच-बीच में भारत जाते रहते हैं। अपनों से मिलने की चाह से हमको कितना मोह रहता है! मैं भी सपरिवार, बच्चों के साथ या कई बार अकेले भारत जाती हूँ। पिछले वर्ष मेरे जेठ जी की बेटी का विवाह था, बच्चों के स्कूल-कॉलेज का समय था इसलिए मैं अकेली ही भारत गई थी। जाने से पहले अपनी माँ को देखने, उनसे बातें करने और उनको गले लगाने का सोच-सोचकर ही मैं खुश हो जाती थी।

फिर भारत जाने से पहले हम सब वहाँ विवाह में, और दोस्तों-रिश्तेदारों को देने के लिए उपहार; जेवर, कैमरा, लैपटॉप, घड़ियाँ, परफ्यूम इत्यादि खरीदने में व्यस्त हो गए। खूब सारा सामान खरीद लिया था। मन में पूरा विश्वाश और खुशी तो रहती ही है कि इन उपहारों को पाकर सब मित्र एवं संबंधी खुश होंगे! खैर, इस विचार के साथ ही मुझे याद आया कि माँ के लिए तो मैंने अभी तक कुछ भी नहीं खरीदा? सोचा उनको क्या अच्छा लगेगा या कौन सी वस्तु उनके काम आएगी? गर्मियों का मौसम था, सोचा ‘दिल्ली हाट’ से कुछ सूती साड़ियाँ खरीद लूँगी और वैसा ही किया भी। फिर विवाह में शामिल हुई और जैसा अनुमान था वैसे ही सब पाया। सबसे मिलना हुआ और विवाह के सब कार्य हर्ष और उल्लास के साथ संपन्न हुए।

अब माँ और भाई के परिवार को मिलने का समय आ गया था! हमने रेलवे स्टेशन से घर को जाते हुए मार्ग में रुककर खूब सारी मिठाई और नाश्ते का सामान खरीदा। माँ को ‘पेठा/मिठाई’ बहुत पसंद है। उनके लिए चाय के साथ खाने वाले उनकी पसंद के अजवायन/जीरे वाले नमकीन बिस्किट और सिर्फ पाव-भर पेठा खरीदा। कुल मिलाकर एक डॉलर से भी कम में माँ का सामान हो गया था। घर पहुँची तो माँ से गले मिली। उस एक क्षण में लगा कि मेरा भारत आना सफल हुआ। मैंने उनको चाय के साथ बिस्किट खाते हुए देखा। भाई से अक्सर सुनती थी कि आजकल माँ कुछ भी इधर-उधर का खा लें तो उनका पेट खराब हो जाता है। इसलिए आजकल उनका खाना-पीना बहुत सादा है। मैंने बहुत ध्यान से उनको पेठे और ‘मिल्क-केक’ में से आधा-आधा टुकड़ा तोड़ कर दिया। अगले 3-4 दिन उनका पेट बहुत खराब रहा। वो गिरते पड़ते शौचालय आती-जाती रहीं। बीच में एक दिन बेहोश भी हो गई थीं। उस दिन मुझे दुःख हुआ कि जब मैं सब जानती थी तो मैंने उनको मिठाई के आधे टुकड़े की जगह एक चौथाई टुकड़ा क्यों नहीं दिया?

अमेरिका वापिस आने से एक शाम पहले मैं घर के

माँ की ममता

पास के दर्ज़ी से अपना सिला हुआ सामान लेने गई। आते-आते अँधेरा हो गया था। घर के पास पहुँची तो देखा कि कोई गेट के पास है। माँ थी। रिक्शा के पहुँचते ही उन्होंने झट से घर का गेट खोल दिया। वो अकेली गेट के पास बैठी मेरी राह देख रहीं थी। बेटी की इतनी उम्र हो गई है लेकिन आज भी अगर दिन के समय घर पहुँचने में देर हो जाए तो माँ को लगता है कि किसी ने उनकी बेटी की सोने की चेन खींचकर उसको मुश्किल में डाल दिया होगा, और रात को देर हो जाए तो लगता है कि किसी ने किडनेप कर लिया! मैंने सामान एक तरफ रखा और उनके सामने के पलंग पर बैठ गई। उन्होंने काँपते हाथों से मेरे सिर पर हाथ फेरा और राहत के साथ कहा 'मैं बहुत डर गई थी। मैंने सोचा कि सुन्दर देखकर किसी ने मेरी बेटी को किडनेप कर लिया।" मैंने मोहित होकर उनको देखा और हँसते हुए पूछा "तुमको मैं सुन्दर दिखती हूँ?" जवाब में उन्होंने कहा, "बेटे, भगवान ने जिसको जैसा दिया, उसके लिए वही सुन्दर है।" मुझे अपनी उम्र और सफेद हो रहे बालों का ध्यान रहता है, लेकिन माँ की उस बात को सुनकर मुझे बहुत सकून मिला और उनके प्यार को पाकर मैं धन्य हो गई। उनकी ममता भरी बातें मेरे लिए 'बाल दिवस' हैं। मुझे याद आ गया कि कैसे माताएँ अपने साँवले-सलोने बच्चों को बड़ा सा काला टीका लगाती हैं ताकि किसी की बुरी नज़र न लगे और लोग मुँह छिपाकर या पीछे से हँसते हैं। लोगों को बच्चे का रंग दिखता है लेकिन माँ को अपने बच्चे में हमेशा अपने जिगर का टुकड़ा दिखता है।

एक बार कहीं एक माँ को अपने बेटे से कहते सुना था कि "बेटा ध्यान से जाना, मार्ग में से रेलगाड़ी गुज़रती है!" और हँसते हुए सुनने वाले ने कहा, "हाँ, हाँ, रेलगाड़ी की तो तुम्हारे बेटे से दुश्मनी है न कि उसको देखते ही पटरी छोड़कर उसके पीछे चल देगी!"

मुझे लगता है कि माताएँ तो अपने बच्चों को देखकर हर पल मातृत्व की खुशी महसूस करती हैं। माँ के साथ का हर पल, उनकी हर बात 'ममतामय क्षण' या 'मदर मोमेंट' है। ऐसी माताओं को हम 'मदर डे' क्या समझायेंगे! वे तो इसके वास्तविक एवं प्रतीकात्मक रूप में हमेशा विद्यमान हैं।

अगर हम आस-पास देखें तो पायेंगे कि कुछ परिवारों में पिता, भाई, बहन या संबंधी बिन माँ के बच्चे के लिए मातृत्व की भूमिका निभा रहे हैं। सौतेली माँ भी माँ जैसी हो सकती है और कुछ ऐसी सौतेली माताएँ भी हैं जो बच्चों को इतना प्यार देती हैं कि असली माँ देखे तो वो भी हैरान हो जाए। आखिर स्नेहशीलता पर किसी का एकाधिकार तो नहीं होता!

जिस दिन मैंने वापिस अमेरिका आना था उस दिन सामान समेटते हुए मैंने देखा कि लिफ़ाफ़े में बचे हुए पेठे के टुकड़े अभी भी वैसे ही पड़े थे। घर में पेठा तो सिर्फ माँ को स्वादिष्ट लगता है। मैंने 1-2 टुकड़े अपने भाई को दिए और 1-2 टुकड़े स्वयम लिए और

माँ की ममता

हम भाई-बहन ने उसको भोजन की तरह खाया क्योंकि माँ कहा करती हैं कि खाद्य पदार्थ को व्यर्थ में नहीं फेंकते।

और फिर अमेरिका के लिए घर से निकलने के वक्त माँ को गले मिली। मन में आया कि अगली बार आने तक अगर माँ जीवित न रहीं तो क्या करूँगी? तब मुझे कैसा लगेगा? इतना प्यार और कौन करेगा? अब भी यह विचार मन में यदा-कदा आ जाता है। पर मन कहता है कि भविष्य में भी अपने मित्रों और सगे सम्बंधियों से प्यार और अपनापन मिलता रहेगा। शायद उनसे थोड़ी ममता भी मिल जाए! फिर सोचती हूँ कि माँ की ममता और स्नेह के लिए तो कभी चिंता या अपेक्षा नहीं करनी पड़ती पर दूसरों के स्नेह के लिए भी क्या ऐसी निश्चिंतता रहेगी या उनके साथ 'मेन्टेन' करना पड़ेगा?

स्वामी दयानन्द... (पृष्ठ २६ से आगे)

उनका खण्डन करके सही अर्थ प्रस्तुत किए। स्वामी जी ने बल दिया कि मंत्रों के अर्थ प्रकरण के अनुसार ही करने चाहिए। वैदिक पदों के अनेकार्थ होने पर भी प्रकरण-सम्बद्ध अर्थ ही संगत होते हैं। स्वामीजी ने इनके अतिरिक्त आर्याभिवनय तथा व्यवहार भानु जैसी पुस्तकें भी लिखीं।

दयानन्द जी चाहते थे कि, तत्कालीन राजा विलासिता छोड़कर देशोत्थान पर ध्यान दें। जोधपुर के राजा यशवन्त सिंह के दरबार की वेश्या नन्हीं जान स्वामी जी के इस तरह के सुझाव से जल उठी। उसने स्वामीजी के रसोइए जगन्नाथ को अपनी ओर मिला लिया। जगन्नाथ ने दूध में जहर मिलाकर स्वामी जी को पिला दिया। जहर मर्मान्तक प्रभाव दिखाने लगा। तीन उल्टियाँ हुईं। दम घुटने लगा। दवाई भी प्रभाव शून्य रही। जगन्नाथ ने अपना अपराध स्वामी जी के सम्मुख स्वीकार कर लिया था। स्वामीजी ने कुछ धन देकर उसे नेपाल की ओर भागने के लिए कहा - "मेरे शिष्यों को मालूम हो जाएगा तो तुम्हें मार देंगे।" यह था उस भारतीय मनीषी का आदर्श। २६ अक्तुबर को उन्हें अजमेर ले जाया गया। समाचार सुनकर दूर-दूर से लोग अजमेर आने लगे।

दीपावली ३० अक्तूबर १८८३, शाम साढ़े पाँच बजे स्वामी जी ने कहा -"जो आर्यजन यहाँ आए हैं, उन्हें बुलाकर हमारे पीछे खड़ा कर दो। सभी द्वार एवं खिड़कियाँ खोल दो।" तत्पश्चात् स्वामी जी ने पक्ष तिथि एवं वार पूछा। वेदमंत्रों का पाठ किया। संस्कृत और हिन्दी में ईश्वर की उपासना की तत्पश्चात् हर्षपूर्वक गायत्री पाठ करने लगे। गायत्री पाठ के पश्चात् नेत्र खोले - "हे दयामय, सर्वशक्तिमान ईश्वर, तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो! अहा! तूने अच्छी लीला की।" कहकर करवट ली और चिरनिद्रा में विलीन हो गए।

लुप्त होते लोकगीत और हमारी लोक संस्कृति

डॉ. जेन्नी शबनम

शिक्षा: एम.ए, एल एल.बी, पी एच. डी **व्यवसाय:** अधिवक्ता, समाज सेवा
वर्तमान कार्यरत: कोषाध्यक्ष, अंगिका डेवलपमेंट सोसाइटी, बिहार
सचिव, वी.भी.कॉलेज ऑफ़ एजूकेशन, भागलपुर, बिहार
अधिवक्ता, नई दिल्ली
ब्लॉग: http://lamhon-ka-safar.blogspot.com
विपत्र: jenny.shabnam@gmail.com

हमारी लोक-संस्कृति हमेशा से हमारी परम्पराओं के साथ पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होती रही है। कुछ दशक पूर्व तक आम भारतीय इसकी कीमत भी समझते थे और इसको सँजोकर रखने का तरीका भी जानते थे। लेकिन आज ये चोटिल है, आर्थिक उदारवाद से उपजे सांस्कृतिक संक्रमण ने सब कुछ जैसे ध्वस्त कर दिया है। हम नक़ल करने में माहिर हो चुके हैं, वहीं अपनी स्वस्थ परंपरा का निर्वहन करने में शर्मिंदगी महसूस करते हैं। आश्चर्य की बात है कि हर व्यक्ति यही कहता कि हमारी संस्कृति नष्ट हो गई है, उसे बचाना है, पाश्चात्य संस्कृति ने इसे ख़त्म कर दिया है। लेकिन शायद लोक परम्पराओं के इस पराभव में वो ख़ुद शामिल है। कौन है जो हमारी संस्कृति को नष्ट कर रहा है? हमारी हीं संस्कृति क्यों प्रभावित हो रही दूसरे देशों की क्यों नहीं? आज भी दुनिया के तमाम देश अपनी लोक परम्पराओं को जतन से संजोये रखे हैं। दोष हर कोई दे रहा लेकिन इसके बचाव में कोई कदम नहीं, बस दोष देकर कर्त्तव्य की इतिश्री।

लोक संस्कृति के जिस हिस्से ने सर्वाधिक संक्रमण झेला है वो है लोकगीत। आज लोकगीत गाँव, टोलों, कस्बों से गायब हो रहे हैं। कान तरस जाते हैं नानी दादी से सुने लोकगीतों को दोबारा सुनने के लिए।

हमारे यहाँ हर त्यौहार और परंपरा के अनुरूप लोकगीत रहे हैं और आज भी ग्रामीण और छोटे शहरी क्षेत्रों में रहने वाले बड़े बुज़ुर्गों में इनकी अहमियत बनी हुई है। विवाह के अवसर पर राम-सीता और शिव-पार्वती के विवाह-गीत के साथ हीं हर विधि के लिए अलग अलग गीत, शिशु जन्म पर सोहर, बिरहा, कजरी, सामा-चकवा, तीज, भाई दूज, होली पर होरी, छठ पर्व पर छठी मइया के गीत, रोपाई बिनाई के गीत, धान कूटने के गीत, गंगा स्नान के गीत आदि सुनने को मिलते थे। जीवन से जुड़े हर शुभ अवसर, महत्वपूर्ण अवसर के साथ हीं रोज़मर्रा के कार्य के लिए भी लोक गीत रचे गए हैं।

एक प्यारे से गीत के बोल याद आ रहे हैं, जो अपने गाँव में बचपन में सुना था...

चूए ओठ से पानी ललन सुखदायी,
पुआ के बड़ाई अपन फुआ से कहिय,
ललन सुखदायी,
चूए ओठ से पानी ललन सुखदायी,
कचौड़ी के बड़ाई अपन भउजी से कहिय,
ललन सुखदायी ...

भोजन पर बना यह गीत सुनने में बड़ा मज़ा आता था। इसमें सभी नातों और खाने को जोड़ कर गाते हैं, जिसमें दुल्हा अपने ससुराल आया हुआ है और उसे कहा जा रहा कि यहाँ जो कुछ भी स्वागत में खाने को मिला वो सभी इतना स्वादिष्ट था कि अपने घर जाकर अपने सभी नातों से यहाँ के खाने की बड़ाई करना।

एक और गीत है जिसे भाई दूज के अवसर पर गाते हैं। इसमें पहले तो बहनें अपने भाई को शाप देकर मार देती हैं फिर जीभ में काँटा चुभा कर

लुप्त होते लोकगीत और हमारी लोक संस्कृति

स्वयं को कष्ट देती हैं कि इसी मुँह से भाई को शाप दिया और फिर भाई की लम्बी आयु के लिए आशीष देती हैं...

जीय जीय (भाई का नाम) भईया लाख बारिस
(बहन का नाम लेकर) बहिनी देलीन आसीस हे...

मुझे याद है गाँव में आस-पास की सभी औरतें इकट्ठी हो जाती थीं और सभी मिलकर एक एक कर अपने अपने भाइयों के लिए गाती थीं। मैंने तो कभी यह किया नहीं, लेकिन मेरे बदले मेरी मइयाँ (बड़ी चाची) शुरू से करती थी। अब तो सब विस्मृत हो चुका, मेरे मन से भी और शायद इस लोक गीत को गाने वाले लोगों की पीढ़ी के मन से भी।

पारंपरिक लोकगीत न सिर्फ अपनी पहचान खो रहा है बल्कि मौज़ूदा पीढ़ी इसके सौंदर्य को भी भूल रही है। हर प्रथा, परंपरा और रीति-रिवाज के अनुसार लोक गीत होता है, और उस अवसर पर गाया जाने वाला गीत न सिर्फ महिलाओं को बल्कि पुरुष को भी हर्षित और रोमांचित करता रहा है। लेकिन जिस तरह किसी त्योहार या प्रथा का पारंपरिक स्वरुप बिगड़ चुका है उसी तरह लोकगीत कह कर बेचे जाने वाले नए उत्पादों में न तो लोकरंग नज़र आता है न गीत। जहाँ सिर्फ लोकगीत होते थे अब उनकी जगह फ़िल्मी धुन पर बने अश्लील गीत ले चुके हैं। अब सरस्वती पूजा हो या दुर्गा पूजा, पंडाल में सिर्फ फ़िल्मी गीत ही बजते हैं। होली पर गाये जाने वाला होरी तो अब सिर्फ देहातों तक सिमट चुका है। गाँव में भी रोपनी या कटनी के समय अब गीत नहीं गूँजते। सोहर, विरही, झूमर, आदि महज़ टी.वी चैनल के क्षेत्रीय कार्यक्रम में दिखता है। विवाह हो या शिशु जन्म या फिर कोई अन्य ख़ुशी का अवसर फ़िल्मी गीत और डी.जे का हल्ला गूँजता है। यहाँ तक कि छठ पूजा जो कि बिहार का सबसे बड़ा पर्व माना जाता, उसमें भी लाउड स्पीकर पर फ़िल्मी गाना बजता है। यूँ औरतें अब भी छठी मइया का ही पारंपरिक गीत गाती हैं। अब तो हाल ये है कि भजन भी अब किसी प्रचलित फ़िल्मी गाने की धुन पर लिखा जाने लगा है। किसी के पास इतना समय नहीं कि सम्मिलित होकर लोकगीत गाए। विवाह भी जैसे निपटाने की बात हो गई है। पूजा-पाठ हो या फिर त्योहार, करते आ रहे इसलिए करना है और जिसका जितना बड़ा पंडाल, जितना ज्यादा खर्च वो सबसे प्रसिद्ध। लोक गीतों का वक़्त अब टी.वी ने ले लिया है। गाँव-गाँव में टी.वी पहुँच चुका है, भले ही कम समय के लिए बिजली रहे पर जितनी देर रहे लोग एक साथ होकर भी साथ नहीं होते, उनकी सोच पर टी.वी. हावी रहता है। अब तो कुछ आदिवासी क्षेत्र को छोड़ दें तो कहीं भी हमारी पुरानी परंपरा नहीं बची है न पारंपरिक लोकगीत। अब अगर जो बात की जाए कि कोई लोकगीत सुनाओ तो बस भोजपुरी अश्लील गाना सुना दिया जाता, जैसे कि ये लोकगीत का पर्याय बन चुका हो। मेहनत मजदूरी के लिए पति को जब परदेस जाना पड़ता है तो उसका सबसे अधिक प्रभाव पत्नी पर ही पड़ता है। उसका विवशतापूर्ण अकेलापन उसे यह कहने पर मज़बूर कर देता है। उसे परदेस में रहने का यह डर भी सताता है कि न जाने कब उसका पति किसी और को पत्नीरूप या सौत रूप में अपना लेगा वह रेल से लेकर, टिकट, शहर, साहब और सौत सबके लिए जो कुछ कहती है वह उसकी व्यथा का सबसे बड़ा प्रतिबिम्ब है -

रेलिया बैरन पिया को लिए जाए रे,
रेलिया बैरन पिया को लिए जाए रे।

जौन टिकसवा से बलम मोरे जैहें, रे सजना मोरे जैहें,
पानी बरसे टिकस गल जाए रे, रेलिया बैरन।।

लुप्त होते लोकगीत और हमारी लोक संस्कृति

जौने सहरिया को बलमा मोरे जैहें, रे सजना मोरे जैहें,
आगी लागै सहर जल जाए रे, रेलिया बैरन।।

जौन सहबवा के सैंया मोरे नौकर, रे बलमा मोरे नौकर,
गोली दागै घायल कर जाए रे, रेलिया बैरन ।

जौन सवतिया पे बलमा मोरे रीझे, रे सजना मोरे रीझें,
खाए धतूरा सवत बौराए रे, रेलिया बैरन।।

नारी की यह पीड़ा यहीं पर खत्म नहीं होती। इससे आगे उसकी दारुण दुख से भरी ज़िन्दगी उसे बचपन से लेकर अब तक की सारी कड़वाहट को पेश कर देती है। यह कड़वाहट है भेदपूर्ण व्यवहार की।

आज के भारत में स्त्री एक वस्तु मानी जाती है। समय बदला, संस्कृति बदली, पीढियाँ बदलीं, लेकिन स्त्री जहाँ थी वहीं है, जिसे हर कोई अपनी पसंद के अनुरूप जाँचता -परखता है फिर अपनी सुविधा के हिसाब से चुनता है, और यह हर स्त्री की नियति है। आज के सन्दर्भ में स्त्री वास्तु के साथ साथ एक विषय भी है, जिसपर जब चाहे जहां चाहें, विस्तृत चर्चा हो सकती है। चर्चा में उसके शरीर से लेकर उसके कर्तव्य, अधिकार और उत्पीड़न की बात होती है। अपनी सोच और संस्कृति के हिसाब से सभी अपने-अपने पैमाने पर उसे तौलते हैं। ये भी तय है कि मान्य और स्थापित परम्पराओं से स्त्री ज़रा भी विलग हुई कि उसकी कर्तव्यपरायणता ख़त्म और समाज को दूषित करने वाली मान ली जाती है। युग परिवर्तन और क्रान्ति का परिणाम है कि स्त्री सचेत हुई है, लेकिन अपनी पीड़ा से मुक्ति कहाँ ढूंढे? किससे कहे अपनी व्यथा? युगों-युगों से भोग्या स्त्री आज भी मात्र एक वस्तु ही है, चाहे जिस रूप में इस्तेमाल हो।

कभी रिश्तों की परिधि तो कभी प्रेम उपहार देकर उस पर एहसान किया जाता है कि देखो तुम किस दुर्गति में रहने लायक थी, तुमसे प्रेम या विवाह कर तुमको आसमान दिया है। लेकिन आज़ादी कहाँ? आसमान में उड़ा दिया और डोर हाथ में थामे रहा कोई पुरुष, जो पिता हो सकता या भाई या फिर पति या पुत्र। जब मन चाहा आसमान में उड़ाया, जब चाहा ज़मीन में ला पटका कि देख तेरी औकात क्या है। स्त्री की प्रगति की बात कर समाज में पुरुष प्रतिष्ठा भी पाता है कि वो प्रगतिवादी है। क्या कभी कोई पुरुष स्त्री की मनःस्थिति को समझ पाया है कि उसे क्या चाहिए? अगर स्त्री अपना कोई स्थान बना ले या फिर अलग अस्तित्व बना ले फिर भी उसकी अधीनता नहीं जाती।

यूँ स्त्री विमर्श और स्त्री के बुनियादी अस्तित्व पर गहन चर्चा तो सभी करते हैं पर मैं यहाँ इन सब पर कोई चर्चा नहीं करना चाहती। मैं बस स्त्री की पीड़ा व्यक्त करना चाहती हूँ जो एक गीत के माध्यम से है। एक भोजपुरी लोक गीत जो मेरे मन के बहुत ही करीब है, जिसमें एक स्त्री अपने जन्म से लेकर विवाह तक की पीड़ा अभिव्यक्त करती है। वो अपने पिता से कुछ सवाल करती है कि उसके और उसके भाई के पालन-पोषण और जीवन में इतना फर्क क्यों किया जबकि वो और उसका भाई एक हीं माँ की कोख से जन्म लिया है। भाई बहन के पालन-पोषण की विषमता से आहत मन का करुण क्रंदन एक कचोट बन कर दिल में उतरता है और जिसे तमाम उम्र वो सहती और जीती है।

इस गीत में पुत्री जो अब ब्याहता स्त्री है,

लुप्त होते लोकगीत और हमारी लोक संस्कृति

अपने पिता से पूछती है कि क्यों उसके और उसके भाई के साथ दोहरी नीति अपनाई गई, जबकि एक ही माँ ने दोनों को जन्म दिया...

(एके कोखी बेटा जन्मे एके कोखी बेटिया
दू रंग नीतिया
काहे कईल हो बाबू जी
दू रंग नीतिया) -२
बेटा के जनम में त सोहर गवईल अरे सोहर गवईल
हमार बेरिया (काहे मातम मनईल हमार बेरिया) -२
दू रंग नीतिया
काहे कईल हो बाबू जी
दू रंग नीतिया
बेटा के खेलाबेला त मोटर मंगईल अरे मोटर मंगईल
हमार बेरिया (काहे सुपली मउनीया हमार बेरिया) -२
दू रंग नीतिया
काहे कईल हो बाबू जी
दू रंग नीतिया
बेटा के पढ़ाबेला स्कूलिया पठईल अरे स्कूलिया पठईल
हमार बेरिया (काहे चूल्हा फूंकवईल हमार बेरिया) -२
दू रंग नीतिया
काहे कईल हो बाबू जी
दू रंग नीतिया
बेटा के बिआह में त पगड़ी पहिरल अरे पगड़ी पहिरल
हमार बेरिया (काहे पगड़ी उतारल हमार बेरिया) - २
दू रंग नीतिया
काहे कईल हो बाबू जी
दू रंग नीतिया
एके कोखी बेटा जन्मे एके कोखी बेटिया
दू रंग नीतिया
काहे कईल हो बाबू जी
दू रंग नीतिया
(अज्ञात लेखक)

यह गीत आज भी उतना ही सामयिक और सत्य है जितना बरसों पहले था। इसकी पीड़ा आज भी पहले की तरह मुखर है, आँसुओं से भरी है।

शब्दार्थ

कोख	गर्भ	सुपली मउनी	सूप और डलिया
दूरंग नीतिया	दोहरी नीति	पढ़ाबेला	पढ़ाने के लिए
काहे कईल	क्यों किये	स्कूलिया	स्कूल
गवईल	गवाना	पठईल	भेजना
हमार बेरिया	हमारी बारी में	पहिरल	पहनना
खेलाबेला	खेलने के लिए	उतारल	उतारना

हनुमान चालीसा भावार्थ: गतांक से आगे

व्याख्याकार: स्वामी डॉ. रामकमल दास वेदांती जी महाराज

संकलन: अर्चना कुमार

विद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर॥७॥

अर्थ - 'विद्यावान' - चौंसठ कला और चौदह विद्या, जैसे वेद, उपवेद, अषड ऐश्वर्य प्राप्त योग विद्या, ज्योतिष विद्या आदि उनके पूर्ण ज्ञाता हनुमान जी माने गए हैं।

'गुणी'–सब गुणों से सम्पन्न भी हैं और प्रत्येक कार्यमें सावधानी से बर्ताव करते हैं।

भावार्थ - हनुमान जी ने चौदह दिनों में चौदह विद्याओं को प्राप्त किया था। इससे सूर्य तेजहत हो गए। वानर की परीक्षा लेते-लेते अपनी ही परीक्षा दे बैठे। सूर्य देव ने भगवान का आह्वान करके विनय की, कि एक वानर को मैं कह बैठा हूँ कि मैं उसे पढ़ाऊँगा। वह जो उत्तर बोलता है वह मेरी भी समझ में नहीं आता। मेरे गुरुपद की लज्जा रखो। भगवान ने हनुमानजी की सम्पूर्ण विद्या लुप्त कर ली। तब हनुमान जी ने अपने राम जी को याद किया। सन्मुख आने पर कहा - "मेरी विद्या को कुण्ठित करने वाला कौन है?" राम जी ने कहा - "हे कपि! मैं भी अवतार लेकर गुरु से उतना ही पढ़ता हूँ जितनागुरु समझ सकें। उनका अपमान नहीं करना चाहिए। शास्त्र की मर्यादा रखनी चाहिए। जाओ, फिर पढ़ो और सूर्यदेव का मान रखो। तुम्हारी विद्या कुण्ठित करने वाला संसार में ना कोई है, न हुआ और न होगा।"" डेढ़ वर्ष तक गुरु का मान रखते हुए हनुमान जी पढ़े और अंत में गुरु दक्षिणा के लिए प्रार्थना की तो सूर्य ने कहा - "मेरा पुत्र सुग्रीव वानर रूप में है, जब तक राम जी ना मिलें उसकी रक्षा करो।"

"अति चातुर" - गुणों के तो हनुमानजी भण्डार हैं, किंतु गुणों का उपयोग किस समय करना, कितना करना, कैसा करना, इसकी चतुरता भी हनुमानजी के पास है। जाम्वंत को आदर देते हुए कहा–"मैं लंका में जाकर क्या करूँ?" जामवंत ने कहा - "तुम जानकी जी का दर्शन करके, रावण से मिलाप करते हुए वापिस आ जाओ।" हनुमान जी ने सोचा जिसमें स्वामी का अनहित न हो और स्वामी का प्रभुत्व शत्रु सेना में खलबली मचा दे; ऐसा कार्य तो अवश्य करना चाहिए। वापिस आने पर राम जी ने प्रश्न किया–"लंका के बारे में मुझे कुछ सुनाओ।" हनुमान जी ने बताया–"लंका समुद्र से पार होने पर भी दस हजार योजन से भी ऊँचे चित्रकूट पर्वत शिखर पर है। चारों दरवाजों पर अस्त्र-शस्त्र सहित सैना का पूरा प्रबंध है। आकाश से पक्षी भी लंका में नहीं जा सकता। त्रिकूट पर्वत के आस-पास सात किले रूपी

हनुमान चालीसा भावार्थ: गतांक से आगे

बाधाएँ थीं–अग्नि की,जल की, काँटों की, काँटेदार वृक्षों की, पर्वत की, कृत्रिम अग्नि की और समुद्र की खाई की। किले के दरवाजे पर पहुँचना कठिन है। परंतु आपकी कृपा से सब दुर्गम वस्तुओं का नाश करके आया हूँ। इसलिए हनुमान जी को “अति चातुर” कहते हैं कि पहले भयवाले स्थानों का वर्णन किया फिर कहा कि उन सबका विनाश करके आया हूँ। इससे सब वानरों के हृदय में उत्साह छा गया।

“राम काज करिबे को आतुर”–राम जी के कार्य को सम्पन्न करने में शीघ्रातिशीघ्र, आलस्य और प्रमाद रहित उत्साह हृदय में धारण करते हैं।

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया॥८॥

अर्थ - हनुमान जी राम चरित्र सुनने के परम रसिक हैं और राम लक्ष्मण तथा जनक जिसके हृदय में विराजमान हैं, उनकी जय हो।

भावार्थ - यहाँ शंका उत्पन्न होती है कि महान शक्तियों के स्वामी हनुमान जी की प्रसन्नता के लिए हमारे पास क्या वस्तु है जिसके द्वारा उनको प्रसन्न कर सकें। इसका समाधान करते हुए तुलसीदास जी कहते हैं कि साधारण धनी लोग भी अहंकार में आ जाते हैं तो इतने महान हनुमान जी हमें कैसे मिलें? ‘रामचरित सुनिबे को रसिया’ श्री रामचंद्र जी के चरित्र सुनने के प्रेमी हैं। चाहे दुष्ट हो चाहे महान धर्मात्मा हो, रामचरित्र सुनते ही हनुमान जी गदगद हो जाते हैं। लवकुश ने प्रार्थना की है -

“यत्र-यत्र रघुनाथ कीर्तन तत्र-तत्र कृत मस्तकाञ्जलिं वाष्पबारि परिपूर्ण-लोचनं मारुतिं नम् राक्षसान्तकं”

जहाँ-जहाँ राम जी का कीर्तन होता है, उनके चरित्र का वर्णन होता है, वहाँ-वहाँ दोनों हाथों को जोड़कर, मस्तक को झुकाकर, नेत्रों में जल भरकर आप ऐसी प्रसन्नता प्राप्त करते हैं, जैसे तीनों लोकों का राज्य मिलने पर निर्धन को होती है। राक्षसों का अंत करने वाले को हम दोनों भाई नमस्कार करते हैं। हनुमान जी को प्रसन्न करने के लिए इतना सहज उपाय है।

“राम लखन सीता मन बसिया”

जहाँ राम, लक्ष्मण और महारानी जानकी निरंतर बसते हैं वहाँ अन्य विषयों का स्थान कैसे हो सकता है। आशय है कि जिनके हृदय में ‘सुंदर स्वरूप’ विराजमान है उन्हें तुच्छ प्राणियों से क्या सेवा लेनी है और क्या पूजन करवाना है।

बिना बुलाये राम चरित्र सुनने के लिए दौड़ पड़ते हैं और हृदय से उद्गार निकालते हैं कि मैं इसको क्या दे दूँ जिसने मुझे प्रभु नाम सुनाया है। ऐसे भक्तवत्सल, दीनबन्धु से विमुख होकर संसार से क्या ले पाएँगे।

कथा वाचन

पंकज चतुर्वेदी

शिक्षा: एम.एससी (गणित), ए.पी.एस. वि.वि. (रीवा)

प्रकाशित कृतियाँ: बालोपयोगी और नवसाक्षर साहित्य - ठगा गया राजा, ग्रामीण क्षेत्रों में यातायात, हैंडपंप की देखभाल, गोबर से सोना, बेर का पेड़, हमारे उपग्रह, कड़वी मिठास, भूत धुलाई केन्द्र, भोंदू, नमक की खेती, पालतू पशुओं की देखभाल, खुशी, मैं भी कुछ करूँ, यह मैं हूँ, चंदा और खरगोश, रिमझिम, बस्ते से बाहर

शोध ग्रंथ: क्या मुसलमान ऐसे ही होते हैं ?

पुरस्कार/सम्मान: सातवें अखिल भारतय हिंदी साहित्य सम्मलेन गाजियाबाद- 1999 में 'युवा लेखक सम्मान'

संपर्क: नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, 5 वसंत कुंज इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-2, नयी दिल्ली - 110070

दूरभाष: 91-120-2649985, 91-9891928376 विपत्र: pankaj_chaturvedi@hotmail.com

रंग, स्पर्श, ध्वनि और शब्द - इन सभी के व्यक्तिगत अनुभव, जो बचपन की सबसे बड़ी पूँजी होते हैं, बालक के जीवन से दुर्लभ होते जा रहे हैं। एक जर्जर समाज-व्यवस्था के बीच जीवन के लिए संघर्ष करती परम्पराएँ इन निहायत जरूरी अनुभवों को मुहैया कराने में सक्षम नहीं रह पा रहीं हैं। बालक बड़े अवश्य हो रहे हैं, लेकिन अनुभव जगत के नाम पर एक बड़े शून्य के बीच।

स्पर्श, ध्वनि, दृष्टि के बुनियादी अनुभवों की गरीबी, बच्चों की नैसर्गिक क्षमताओं को खोखला किए दे रही हैं। स्कूल में पढ़ाई का बोझ बढ़ता जा रहा है- ऐसी पढ़ाई का बोझा, जिनका बच्चों की जिंदगी, भाषा और संवेदना से कोई सरोकार नहीं है। ऐसी पढ़ाई समाज के क्षय को रोक नहीं सकती, उसे बढ़ावा ही दे सकती है। उन दिनों को याद करें जब तारों भरे आकाश के तले दादी-नानी परियों की ऐसी कहानियाँ सुनाया करती थीं, जिनसे चरित्र और व्यक्तित्व के विकास की प्रेरणा मिलती थी।

आज "कथा-कहने" को बालकों के मानसिक विकास का सर्वाधिक सशक्त तरीका माना जा रहा है। इन दिनों जब प्रत्येक पालक अपने बच्चों के शारीरिक, मानसिक और नैतिक विकास के लिए जागरूक है, ऐसे में "कथा-वाचन" की प्रक्रिया खासी महत्त्वपूर्ण हो गई है। अमेरिकी मनोवैज्ञानिक डा. के.एल.रेड्डी और डा. के मूर्ति द्वारा किए गए शोधों से पता चला है कि बच्चों को रोज कहानी सुनाने से उनमें अंदरूनी "प्रतिरक्षा यांत्रिकी' (Defence Mechanism) निर्मित होती है। यह यांत्रिकी, बालकों को विषम परिस्थितियों से जूझने की शक्ति देती है। पहले तो संयुक्त परिवार थे और बच्चों को कहानी कहने के लिए घर में बड़े-बूढ़े होते थे। आज माता-पिता जीवकोपार्जन में व्यस्त हैं और परिवार बिखर रहे हैं। ऐसे में खाली समय व्यतीत करने के लिए बच्चे दूरदर्शन के भरोसे अधिक हैं। इसके दुष्परिणाम समाज में तेजी से सामने आ रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में कथा वाचन एक सात्विक और सरल माध्यम है। इसके लिए कुछ आवश्यक सुझाव इस प्रकार हैं:

कहानी का चुनाव

कहानी का चुनाव बालकों के आयु वर्ग और शैक्षिक स्तर को ध्यान में रख कर करना चाहिए। बच्चों की मानसिक स्थिति और सामाजिक परिवेश के अनुरूप सुनाई जाने वाली कहानियाँ उन पर स्थाई प्रभाव छोड़ती हैं।

कथा वाचन

आयु वर्ग के अनुसार निम्नानुसार कहानियों का चयन करना चाहिए:-

३-५ वर्ष

इस आयु वर्ग का शिशु स्वयं केंद्रित होता है। उसका संसार उसके आसपास तक ही सीमित होता है। वह मेरी माँ, मेरा घर, मेरे खिलौने जैसे विषयों से बाहर वह नहीं सोच पाता है। अक्षर ज्ञान होता नहीं है और शब्द ज्ञान बेहद सीमित होता है। इन्हें ऐसे कविता या गीत सुनाएँ, जिनसे इनकी जुबान पलटे, उच्चारण स्वस्थ हो। या फिर चार्ट, मुखौटे, चित्रों के द्वारा छोटी-छोटी काल्पनिक घटनाएँ सुनाएँ, जिनके विषय उनके परिवेश के ही हों। बालकों को छोटी कहानी सुनानी चाहिए। कहानी में घटना और कार्य की प्रधानता हो तथा वर्णन बहुत साधारण और सरल हो। भाषा सरल और अच्छी हो, बड़े-बड़े, द्विअर्थी वाक्यों का प्रयोग न करें ।

६-८ वर्ष

बालक अब बड़े होने लगते हैं। वह विद्यालय जाने लगते हैं तथा पड़ोस में दूसरे बालकों के साथ खेलने लगते हैं। उनकी रुचि स्वयं से निकल कर दुनिया में हो जाती है। वह अपने आसपास की दुनिया के प्रति जिज्ञासु हो जाते हैं। जानवर, आकृतियाँ, रंग उन्हें मोहित करते हैं। उनके मन में भाँति-भाँति की कल्पनाएँ जन्म लेती हैं। वे विज्ञान गल्प, परिकथा, पंचतंत्र,उपनिषदों की कहानियाँ आदि को पसंद करने लगती हैं।

कहानी के पात्रों से बालक भली-भाँति परिचित हो, जिन्हें वह रोज देखता है जैसे कुत्ता, बिल्ली, गाय, घोड़ा, चिड़िया तोता, मैना, बालक, बूढ़ा, नौकर, भिखारी, दुकानदार, डाक्टर, इंजीनियर, टीचर, बैलगाड़ी, कार, हवाई जहाज आदि-आदि। ऐसे बालकों को कहानी कहते समय संवाद प्रक्रिया को अपनाना चाहिए, यानी कथा के प्रत्येक पहलू में बच्चों की भागीदारी हो। जैसे कि पात्र या स्थान का नाम उन्हें तय करने दें, फिर क्या हुआ? या ऐसे ही प्रश्न बीच-बीच में पूछते चलें।

८-१२ वर्ष

अब बालक खुद को दुनिया का एक हिस्सा मानने लगता है। वह वास्तविक और आदर्श की बातें पसंद करता है। रोमांच, रोमांस, किस्से-कहानी, ज्वलंत विषयों से जुड़े विषयों पर पढ़ना पसंद करता है। इस आयु में बच्चे अपने जीवन का आदर्श चरित्र तलाशने लगते हैं, वे कुछ लोगों से प्रभावित होते हैं और उनके जैसा बनना चाहते हैं। साथ ही कुछ व्यक्तियों, मान्यताओं व सिद्धांतों के प्रति उनकी अरुचि भी होती है। ऐसे बच्चे बेहतर पाठक होते हैं, अत: उन्हें कहानी सुनाते समय पाठक की मन:स्थिति का आकलन अत्यावश्यक है ।

१३ वर्ष से अधिक

यह बच्चों की किशोरवय अवस्था है। उन्हें यात्रा वृत्तांत, रुचियों ,कैरियर जैसे विषयों पर सुनना पसंद होता है। इन्हें सुनाने के लिए कुछ लम्बे या धारावाहिक कथानकों का चुनाव किया जा सकता है। ध्यान रहे कि कहानी की विषय वस्तु जहाँ तक हो वास्तविक हो, क्योंकि इस आयु वर्ग के बच्चे तार्किक होते हैं व अत्यधिक कल्पनाशील कथा में वे वास्तविकता को तलाशने लगते हैं। ऐसे में बीच कथानक में बहस छिड़ जाती है और कथा वाचन का मजा समाप्त हो जाता है।

कहानी की प्रस्तुति

प्रयास होना चाहिए कि कहानी के पात्रों/स्थानों के नाम, विभिन्न पात्रों की आवाज या बोलियों और संवाद के रूप में कम से कम एक चौथाई भागीदारी बच्चों की हो। यह न लगे कि केवल एक कथानक चल रहा है और बच्चे मुँह पर अँगुली रख कर चुप

कथा वाचन

बैठे हैं।

बच्चों की जिज्ञासाओं और प्रश्नों को संयम के साथ तत्काल उत्तर देना चाहिए। किसी ऊटपटांग सवाल को गुस्से से नहीं बल्कि हँसी में ही टाल दें। हो सकता है कि किसी कहानी की किसी बात को समझने के लिए एक नई कहानी सुनानी पड़े। कहानी के बीच में कहीं-कहीं कविता हो तो बच्चों को अधिक भाती है, इस प्रकार उन्हें कविता याद भी हो जाती हैं। इस बात का ध्यान रखें कि कहानी के बीच की कविताएँ बहुत छोटी, सरल और केवल तुकबंदी लिये हुए हों और कहानी से संबंधित हों। कहानी की भाषा सरल और बच्चों की समझ के अनुरूप होनी चाहिए। उसमें संज्ञा, क्रिया और रोजमर्रा के विशेषण तथा क्रियाविशेषण का ही प्रयोग हो तभी बच्चे उसे समझ सकेंगे, आनंदित होने के साथ-साथ कुछ सीख भी सकेंगे।

अभिनय

बहुत छोटे बच्चों को कहानी सुनाने में चित्रित पुस्तकें, चार्ट आदि प्रयोग में लाएँ। हमारा उद्देश्य यह होना चाहिए कि अभिनय या अन्य माध्यमों से कहानी का हर शब्द बच्चों को जीवंत होता उसी प्रकार दिखे जैसे उन्हें टी वी/फिल्म में उन्हें मजा आता हैं।

कई कहानियाँ अभिनयपरक बनाई जा सकती हैं जैसे बालगोपाल की बाल लीला, ध्रुव, प्रह्लाद, पांडवों का बचपन, महाराणा प्रताप, झांसी की रानी, वसंत ऋतु का उत्सव आदि अनेक प्रसंग हैं जिनको सरल भाषा में तैयार कर बाल-पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है। इस प्रकार खेल-खेल में मनोरंजन के साथ बच्चों में सहयोग, सहनशक्ति, मित्रता, प्रेम, स्मरण शक्ति आदि का विकास होगा।

कथा-वाचन के लाभ

१. बच्चे में छिपी नैसर्गिक प्रतिभाओं को उभरने का मौका मिलता है।
२. शब्द संसार में बढ़ोतरी
३. बातचीत और साक्षात्कार के लिए आत्म विश्वास में बढ़ोतरी
४. पढ़ने की आदत बढ़ती है
५. समूह में काम करने तथा नेतृत्व क्षमता विकसित होती हैं।
६. अपने पालकों/ शिक्षकों से वैचारिक अंतरंगता बढ़ती है।

कहानी कहने की कला

बच्चे कथा प्रेमी होते हैं। कोई बच्चा कितना भी शैतानी कर रहा हो, आप उसका ध्यान कहानी की ओर आकृष्ट कर दें, वह शांत हो कर आपके पास आकर कहानी सुनने बैठ जाएगा। कोई विषय कितना भी नीरस या कठिन क्यों न हो, यदि उसे कहानी के माध्यम से बच्चों को समझाएँ तो तुरंत ही बच्चे में उस विषय के प्रति रुचि जाग्रत हो जाएगी। कहानी के माध्यम से शिक्षा देने का ढंग बहुत ही सुन्दर, रोचक और सरल एवं प्राचीन है। पंचतंत्र रचयिता पं. विष्णु शर्मा ने एक राजा के मूढ़ और शैतान बच्चों को कहानियों के माध्यम से ही नीति की सभी बातों का ज्ञान करा दिया था।

बच्चों को कहानी सुनाते समय यदि हम कुछ बातों का ध्यान रखें तो कहानी सुनाना सफल हो जाएगा। कहानी में रोचकता पैदा करने के लिए कुत्ते का भौंकना, चिड़िया का चहचहाना, बच्चे का रोना, बिल्ली की म्याऊँ, शेर की दहाड़, बकरी की में ऽ ऽ में ऽ ऽ.... आदि आवाज़ निकाल कर या अभिनय करके बताएँ तो बच्चा सरलता से समझ जाता है और साथ ही आनंदित भी होता हैं। अभिनयपूर्ण

कथा वाचन

वर्णन से बच्चों के मस्तिष्क में घटना का सजीव चित्र खिंच जाता है। बच्चों की कल्पना शक्ति का विकास होता है।

छोटे बच्चों की कहानियाँ हमेशा सरल और छोटी हों। ज्यादा लम्बी कहानियाँ सुनाने से बच्चे थक जाते हैं, उनकी रुचि समाप्त हो जाती है। बच्चे स्वभाव से चंचल होते हैं, अत: लम्बी कहानी सुनने का धैर्य उनमें नहीं होता है।

बच्चों की कहानियों का अंत हमेशा सुखांत हो। कहानी का नायक अगर बच्चा हो तो बच्चों को बहुत अच्छा लगता है। जैसे भालू का बच्चा, कुत्ते का बच्चा, बिल्ली का बच्चा, सात राजकुमारों में सबसे छोटा राजकुमार, 3 बहनों में सबसे छोटी बहन। छोटों की सफलता की कहानी सुन कर बच्चों में विशेष आनंद और उत्साह का भाव जागता है; क्योंकि वे स्वयं को उनकी जगह रख कर कहानी सुनते हैं। उनकी विजय में वे अपनी विजय देखते हैं और उनकी तरह ही वे भी अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरित होते हैं।

बच्चों की समझ के अनुसार ही कहानी का कथानक छोटा-बड़ा किया जा सकता है। उसमें जानवर आदि की बोलियाँ, घंटी की टनटन, बादल, बंदूक, सीटी आदि की आवाज को प्रगट करने वाले शब्द जैसे कूकू, टनटन, गड़गड़, ठाँय-ठाँय आदि का प्रयोग करने से कहानी में सजीवता आती है और वह प्रभाव भी डालती है। नीरस कहानी तो बच्चे सुनना ही पसंद नहीं करेंगे तो उससे सीखेंगे क्या?
कहानी कहने का तरीका ऐसा हो कि बच्चा भी उसमें भाग ले सके। उसकी उत्सुकता बनी रहे। जैसे आप मूसलाधार बारिश में सैनिक के भागते जाने की बात बता रहे हैं तो अब बच्चे से पूछिए कि हाँ बेटा, तुमने देखा होगा जब तेज बारिश आती है तो क्या लगता है? अब बच्चा अपनी आँखों देखी मूसलाधार बारिश का वर्णन करेगा कि कैसे तेज हवा चली, बिजली चमकी, पेड़ की टहनी टूट कर गिरी आदि। इस प्रकार आप देखेंगे कि बच्चे सचेत होकर कहानी के साथ जुड़कर अपनी जानकारी को बढ़ाते जाएंगे।

३ वर्ष की उम्र आते-आते कहानी के हँसी मजाक में हिस्सा लेने लगता है।

बहादुर, आज्ञाकारी, परिश्रमी, दयालु, विनम्र, बुद्धिमान बच्चों की कहानियाँ बच्चे चाव से सुनते हैं और पसंद करते हैं। इन कहानियों का बच्चे के व्यक्तित्व विकास पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। 7-8 वर्ष का बच्चा साहसिक यात्रा, खोज, युद्ध, विज्ञान आदि की कहानियाँ विशेष रूप से सुनता है। कहानी सुनाते समय घटना तथा भाषा दोनों ही सरल और बच्चे की आयु और समझ के अनुरूप होनी चाहिए; नहीं तो बच्चे का मन ऊबने लगता है, वैसे भी बच्चे चंचल प्रवृत्ति के होते हैं ।
भयानक या वीभत्स कहानियाँ बच्चों को नहीं सुनानी चाहिए। इससे वे डर जाते हैं। यह डर चिरस्थायी भी हो सकता है, जिससे आगे अनेक उलझनें पैदा हो सकती हैं।

कई कहानियाँ ऐसी होती हैं जो सचित्र पुस्तकों के सहारे सुनाई जाती हैं। घटना सम्बन्धी प्रत्येक चित्र को दिखाकर, पात्रों के क्रियाकलाप, वेशभूषा, स्थान, समय आदि का परिचय देते हुए कहानी आगे बढ़ती है। बच्चे गौर से चित्र देखते हैं समझते हैं। आजकल रंग-बिरंगी, सुन्दर, सचित्र कहानियों की किताबें आती हैं; जो हर विषय में रहती हैं, जिन्हें पढ़कर बच्चा आनंदित तो होता ही है साथ ही उनकी कहानियाँ बच्चे की कल्पना शक्ति, शब्द भंडार बढ़ाने के साथ ही चरित्र निर्माण में भी सहायक होती हैं।

(शेष पृष्ठ ४९ पर)

आनंद सिंगीतवार

शिक्षा - नागपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी स्नातकोत्तर में तृतीय मेरिट एवं समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर भारत सरकार ,राजभाषा विभाग के अंतर्गत संचालित केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो से अनुवाद में गोल्डमेडल

सम्प्रति – वित्तमंत्रालय के अधीनस्थ सेन्ट्रल एक्साइज एवं कस्टम्स विभाग ,पुणे में सहायक निदेशक/राजभाषा के पद पर कार्यरत रहकर राजभाषा कार्यान्वयन में संलग्न

अन्य गतिविधियाँ - मंच संचालन ,गायन ,लेखन ,अध्यापन ,अनुवाद ,इवेंट मैनेजमेन्ट में सक्रिय ,विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन , गजल एवं व्यंग्य मुख्य विद्या, एक गजल एवं एक व्यंग्य संग्रह प्रकाशन की ओर ,अनगिनत कार्यक्रमों का मंच-संचालन ,साहित्य सेवा हेतु विभिन्न संस्थाओं द्वारा पुरस्कार/सम्मानपत्र ,हिन्दी प्रचार-प्रसार का जुनून ,अनवरत १४ वर्षों से राजभाषा हिन्दी का सफलतापूर्वक कार्यान्वयन एवं विभागीय स्तर पर उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु अनेक बार पुरस्कृत ,किसी विदेशी संस्थान से जुड़कर हिन्दी प्रचार-प्रसार कार्य करने का अरमान।

बारिश की छतरी

दिनोंदिन बुढ़ापे की ओर अग्रसर हो रही हमारी डायनासोरी काया में हर दिन गजब के बदलाव हो रहे हैं। इन बदलावों का असर हमारे शारीरिक अंगों पर हो रहा है। वो तो ईश्वर की कृपा है कि हाथ-पैर, नाक-कान आदि तो ठीक-ठाक काम कर रहे हैं। मगर, लगता है सारा असर इकतरफा होकर दिमाग की ओर जा रहा है जिसके कारण भूलने की बीमारी ने हमें अपनी मजबूत गिरफ्त में ले लिया है। भूलने की इस बीमारी ने हमारी क्या-क्या दुर्गति नहीं की आपको क्या बताएं। अब बारिश के मौसम को ही लीजिए। बारिश के मौसम में सबसे जरूरी वस्तु होती है - छतरी। ऐसा नहीं है कि हमारे पास छतरी नहीं है और हम आपको हमारे पास छतरी के न होने का दुखड़ा सुना रहे हैं। छतरी हमारे पास है और वो भी ब्रांडेड। ऊपर से भैंस की तरह एकदम काली और अंदर से चांदी सी उजली। चमक ऐसी जनाब कि मजाल है आज तक उतरी हो। उतरेगी भी कैसे कभी इस्तेमाल की हो तो उतरे। वो क्या हुआ कि जब हमने छतरी खरीदी तो अपने चतुर सुजान होने का प्रमाण देते हुए हमने दुकानवाले से पूछा कि छतरी कितने दिन तक चलेगी। दुकानदार की कही हुई बात पर हम आज तक अमल कर रहे हैं। उसने कहा कि जन्मभर चलेगी, बस इसे धूप और बारिश से बचाकर रखना। तो हम ठहरे निहायत हिदायतपसंद इंसान। छतरी वाले की हिदायत का मजाल है हमने आजतक उल्लंघन किया हो। भले ही तेज धूप ने हमारी चमड़ी झुलसा दी हो मगर हमने कभी छतरी को हमें छाया देने की तकलीफ नहीं दी। बारिश में भीगते हुए हम सर्दी-खांसी के मरीज हो गए मगर छतरी को तकलीफ नहीं दी। ऐसा नहीं है कि हम कंजूस हैं। भई, याद रहे तब तो तकलीफ देंगे न। इसमें कोई शक नहीं कि हमारा 'जिओ और जीने दो' के सिद्धान्त पर अटूट विश्वास है। अपना मानना है 'न टेंशन लो और न ही टेंशन दो।' बहरहाल, अधिकारी से लेकर चपरासी तक की हिदायतों पर हम आँख मूंदकर यकीन करते हैं बशर्ते उस हिदायत में हमारे हितसंबंधी बात हो। खैर साहब, छतरी खरीदकर हमने अपने लिए नई मुसीबत खड़ी कर ली। हमारी भूलने की आदत के चलते हमारी कितनी ही छतरियाँ आज दूसरों के घरों की शोभा बढ़ा रही हैं। किसी सज्जन के हाथ लग जाती है तो बेचारा दौड़-दौड़ चला आता है। छतरी वापस करता है, चाय-नाश्ता करता है और चला जाता है। 'मुफ्त के माल पर, दीदे लाल' के सिद्धान्त पर

बारिश की छतरी

निष्ठा रखनेवाले किसी दुर्जन के हाथ लग गई तो समझो 'अल्लाह मेहरबान तो गधा पहलवान।' वैसे, ऐसे मौके हमारे साथ कम ही होते हैं क्योंकि हम ठहरे पक्के एकनिष्ठ। एकनिष्ठता हमारे खून में है। अपना सब्जीवाला एक, किरानावाला एक, दूधवाला एक, पेपरवाला एक, कपड़ेवाला एक और तो और पत्नी एक और बच्चा भी एक।

मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि एकनिष्ठता के सिद्धान्त पर चलनेवालों को वैसे भी अधिक तकलीफ नहीं होती। और तो और अपनी दौड़ भी एक। वही 'मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक।' सो किसी के पास छतरी छूट भी जाये तो बड़ी ईमानदारी के साथ घर वापस आ जाती है ठीक उसी तरह जिस तरह 'सुबह का भूला शाम को घर आ जाता है।' बहरहाल, भूलने की इस आदत ने साहब हमें कई बार बड़े धर्मसंकट में डाला। एक बार मार्केट से सब्जी लेकर लौटते समय रास्ते में बारिश हो गई। बड़ी मुश्किल से बचते-बचाते तरबतर घर पहुंचे तो पत्नी लगी हमपे बरसने। बाहर बादल बरस रहे थे और घर में पत्नी। उसके याद दिलाने पर हमें उसकी डांट-फटकार समझ में आयी। क्यों न डांटें बेचारी। दरअसल छतरी हमारे बगल में दबी हुई थी और हमें कुछ याद ही नहीं रहा और हम पानी में भीगकर घर जो पहुंचे थे। हमने कई दफा पत्नी को समझाया कि इस नामुराद छतरी को हमारे गले से न बांधों। मगर, उसकी दी हुई कसमें हमारे गले पड़ जाती हैं और हमें न चाहकर भी छतरी को लेकर घर से निकलना पड़ता है। कई बार इस झंझट से हमने छुटकारा पाने के लिए अपनी छतरी को किसी गरीब के हवाले कर दिया। कई बार घर के ऐसे कोने में रखा जहां हमारे घर में दिन-रात दंड पेलते चूहों ने छतरी में इतने छेद कर दिए कि एक-एक छेद से विश्व के एक-एक देश का नक्शा आप देख लें । इधर छतरी की सत्यानाशी होती है उधर कुछ दिनों बाद ही हमें जान से ज्यादा चाहनेवाली हमारी पत्नी अपने सावित्री होने का पूरा परिचय देते हुए अपने सत्यवान के लिए फिर एक नई छतरी घर ले आती है। हम भी रोज अपने अक्ल के घोड़े दौड़ाते रहते हैं कि किसी तरह छतरी घर ही पर रह जाये। मगर, वाह रे हमारी सावित्री। जब तक हम छतरी उठाकर घर से बाहर नहीं हो जाते वो दरवाजे से हटने का नाम ही नहीं लेती। 'तू डाल-डाल, मैं पात-पात का खेल' हर दिन चलता है। मुई छतरी न हुई, जी का जंजाल हो गया। जिस दिन आसमान साफ रहता है, धूप खिली-खिली रहती है, हम भी खिले-खिले रहते हैं। कारण, छतरी जो नहीं ले जानी पड़ती है। मगर, मौसम जब बारिश का हो तो क्या भरोसा। भीगते हुए घर पहुंचे कि दूसरे दिन से फिर छतरी गले पड़ जाती है। ऊपर से पत्नी की बातें सुनने को मिलती हैं, ठीक उसी तरह जिस तरह दीवाली के महीने में तनख्वाह के साथ-साथ बोनस भी मिलता है। हमारे इकलौते सुपुत्र तक को हम पर दया नहीं आती। हद तो यह है कि कभी हम जानबूझकर छतरी घर छोड़ कर रास्ते पर निकल जाते हैं कि चलो अब जान छूटी। पता चलता है कि पीछे से जनाब दौड़े-दौड़े आ रहे हैं, उसी नामुराद छतरी को देने। (शेष पृष्ठ ४९ पर)

रचिता सिंह

सलाद बनो सूप नहीं

अमेरिका में रह रहे माता-पिता की चिंता का सबसे बड़ा विषय अपने बच्चों को भारतीय बनाए रखना होता है। सभी माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे पढ़ने में बहुत होशियार हों और अच्छे विश्वविद्यालयों में जाएँ। वहाँ से निकल कर ऊँचे-ऊँचे पदों को प्राप्त करें, बहुत पैसा कमाएँ, और पूरे ऐश और आराम का जीवन बिताएँ, लेकिन साथ ही वे भारतीय संस्कृति को न भूलें।

समय की इस भाग-दौड़ में दोनों पति-पत्नी दिन-रात काम करते हैं, और अपने सुखों का त्याग करते हैं। केवल इसलिए कि अपने बच्चों को और अपने को एक ऐश्वर्यपूर्ण जीवन दे सकें। इस मारा-मारी में अधिकांश माता-पिता भूल जाते हैं कि वे बच्चों को इस तरह केवल तन के बाहरीय सुख, जिन्हें हम भौतिक सुख कहते हैं, दे पाते हैं। एक बच्चे का बालपन जिस वस्तु का प्यासा होता है वह उसे हम कभी नहीं दे पाते, और वह है 'समय'। क्या दोनों काम करने वाले माता-पिता बच्चे को पर्याप्त (quality) समय दे पाते हैं?

मैं जब भी भारतीय समाज पर दृष्टि डालती हूँ तो पाती हूँ कि माता-पिता हर दिन बच्चों को लेकर किसी न किसी कक्षा में जाते हैं, और यह आशा करते हैं कि उनका बच्चा गणित में, अंग्रेजी में, कराटे में, स्केटिंग में, नृत्य में, गायन में, हिन्दी में, धर्म की शिक्षा में (बाल -विहार), और कला की कक्षाओं में सब से होशियार बनेगा। माता-पिता यह काम कई बार अपने आस-पास के लोगों को देखकर या कोई विज्ञापन को देखकर प्रारंभ कर देते हैं। ऐसे में स्थिति यह हो जाती है कि शायद ही कोई दिन होता है जब माता-पिता और सभी बच्चे शांति से घर में रह कर हँसते-बोलते और खाते-पीते हैं।

हम जानते हैं कि बच्चे के ऊपर वातावरण का कितना प्रभाव पड़ता है। यदि आप बच्चे को घर के बाहर अधिक रखेंगे तो स्वाभाविक है कि बाहर की चीजों को वह अधिक अपनाएगा। आप क्यों चाहते हैं कि हरदम आपके बच्चे को कोई बाहर वाला शिक्षक ही कुछ सिखाए? क्या आप अपने बच्चे को प्रतिदिन 2 घंटे का समय देकर जो आपके पास है (भारतीय संस्कार) उसे नहीं दे सकते?

अधिकांशतः लोग चाहते हैं कि कोई संस्था उनके बच्चों को भारतीय संस्कृति सिखा दे, उन में संस्कार भर दे। वे उस संस्था को मुँह माँगा मूल्य देने को भी तैयार रहते हैं। मैं सभी माता-पिताओं को यही बताना चाहूँगी कि यदि कोई संस्था ऐसा दावा भी करें तो आप उसके झाँसे में मत आइएगा, क्योंकि कोई भी बाहर का व्यक्ति या संस्था आपके बच्चे को संस्कारी नहीं बना सकती। संस्कारों और भारतीय संस्कृति को जीना पड़ता है। पढ़ने और पढ़ाने से कोई संस्कृति नहीं सीखता।

यदि माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे संस्कारी बनें, भारतीय संस्कृति को सीखें तथा अपने आने वाले जीवन को सुखी बनाएँ तो हर प्रकार की हीन भावना को अपने मन से निकाल दें, और सबसे पहले आप स्वंय संस्कारी बनें। यदि आप अपने धर्म का पालन करेंगे तो कोई भी कारण नहीं है कि आपके बच्चे आपके अनुसार न बनें।

बच्चों को कुछ कक्षाओं में भेजना आवश्यक होता है, पर आप बच्चे के कौशल और पसंद पहचान कर उसे सप्ताह में केवल 3 कक्षाओं में डालिए। हर बच्चा हर चीज में अच्छा नहीं होता, इसलिए कक्षाओं को बच्चों पर थोपिए नहीं, बल्कि बच्चे जिन कक्षाओं में जाएँ आप भी उनमें पूरी रुचि लें। यदि आप कक्षा में बैठ सकते हैं तो अवश्य बैठें। तभी आप अपने बच्चे की आवश्यकता को, गुणों को, रुचि को पहचान पाएँगे। मैंने अधिकांश माता-

सलाद बनो सूप नहीं

पिता को बच्चों से बचते देखा है। यदि बड़े होकर बच्चे भी यही करें तो इसमें आश्चर्य क्या?

एक और महत्वपूर्ण बात जिस पर माता-पिता ध्यान नहीं देते, वह है उनका स्वंय का व्यवहार। अधिकतर माता-पिता अमेरिका में आकर अपनी भाषा, अपना भोजन, अपनी वेशभूषा, अपनी परंपराएँ सब कुछ छोड़ देते हैं। वे सोचते हैं कि हम तो भारतीय हैं कुछ भी पहनें, कुछ भी खाएँ, कुछ भी करें, हम तो भारतीय ही रहेंगे। और वे

मेरा जूता है जापानी, ये पतलून हिन्दुस्तानी

सर पे लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी।

को अपना लेते हैं। कुछ प्रतिशत यह सच भी है, पर आपकी यह सोच आपके बच्चों को भ्रमित कर देती है। यदि हमें किसी मंजिल पर पहुँचना है तो एक पथ चुनना होगा। प्रतिदिन रास्ता बदलने से हम अपनी मंजिल तक कभी नहीं पहुँचेंगे।

कुछ लोग विदेश आकर विदेशी संस्कृति में ऐसे रंग जाते हैं कि अपने अस्तित्व को ही गंवा बैठते हैं। अपने आस-पास के वातावरण के साथ ताल-मेल बैठाना बहुत आवश्यक होता है, पर इसके लिए अपनी पहचान खोना आवश्यक नहीं है। आप अपनी अच्छी बातें दूसरों को सिखाएँ और दूसरों की अच्छी बातें स्वंय सीखें। पर यह सीखना सिखाना ऐसा होना चाहिए कि अपनी पहचान बनी रहे।

जिस प्रकार सलाद में कटी हुई सभी सब्जियाँ एक-दूसरे में मिलकर भी अपना एक अलग स्वाद रखती हैं, और आप प्रत्येक को उसके रंग, आकार, और स्वाद से पहचान सकते हैं। वहीं दूसरी ओर सूप में सभी सब्जियों को एक साथ उबाल देने पर सूप तो स्वादिष्ट बनता है, पर पहचानना कठिन होता है कि कौन-कौन सी सब्जियाँ इसमें डाली गई हैं। अत: यदि आप अपने बच्चों के अस्तित्व को बनाए रखना चाहते हैं तो आपको स्वंय को संभालना होगा। बच्चों को अधिक ऐशो-आराम देने से वे बिगड़ जाते हैं। उनका मन पढ़ाई से हटकर घूमने-फिरने, पार्टी, और खरीददारी में ज्यादा लगता है। अत: बच्चों को उतनी ही सुविधाएँ दें जितनी आवश्यक हैं। उन्हीं कक्षाओं में डालें जो आपके बच्चे के लिए आवश्यक हैं, और अधिक से अधिक समय बच्चों के साथ खेलें और उन्हें कहानियाँ सुनाएँ। आप उन्हें अपने बचपन की बातें बताएँ, जैसे आपके जीवन में क्या-क्या कठिनाइयाँ आईं और आप उनसे कैसे पार हुए। भारत की बातें, त्योहार मनाने के आपके अनुभव, अपने मित्रों की बातें, आपकी पाठशाला और विश्वविद्यालय कैसा था, इत्यादि सभी बताएँ। रामायण, महाभारत, गीता, पंचतंत्र, हितोपदेश, जातक कथाएँ आदि पुस्तकें घर लाएँ, स्वंय भी पढ़ें और बच्चों को भी पढ़ाएँ। भारत की महान विभूतियों की कहानियाँ अपने बच्चों को सुनाएँ। अगर आप बचपन से ही इन बातों का ध्यान रखेंगे तो कोई कारण ही नहीं कि आपके बच्चे अच्छे न बनें। यहाँ मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछ रही हूँ। इनके उत्तर आपको स्वंय को देने हैं।

- क्या आप हर 2-3 वर्ष में भारत जाते हैं?
- क्या आप घर में अपनी मातृ भाषा में बात करते हैं?
- क्या आप सभी भारतीय त्योहारों को खूब धूम-धाम से मनाते हैं?
- क्या आप प्रतिदिन आरती, प्रार्थना, ध्यान या किसी भी प्रकार की गतिविधि जैसे तुलसी जी को जल देना, दिया जलाना, अगरबत्ती जलाना, कुछ श्लोक, चौपाई या भजन आदि गाते हैं?
- क्या आप समारोह, मंदिर, पूजा या अपने भारतीय मित्रों के घर भारतीय परिधान पहन कर जाते हैं?
- क्या आप कभी-कभी बच्चों को भारत की बातें तथा परंपराओं के बारे में बताते हैं?
- क्या आप अपने 12 वर्ष से छोटे बच्चों को सोने के पहले या खेलने के समय शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनाते हैं?
- क्या आप अपने बच्चों के साथ खेलते और पढ़ते हैं?
- क्या आप अपने बच्चों को भारतीय नृत्य, संगीत, वाद्य, भाषा या धर्म की कक्षाओं में भेजते हैं?

सलाद बनो सूप नहीं...

- क्या आपके अधिकांश मित्र भारतीय हैं?
- क्या आप किसी भारतीय समाज, एसोसिएशन, या मंदिर के सेवा कार्यों से जुड़े हुए हैं?
- क्या आप बच्चे के संस्कारों को उसकी पढ़ाई से ज्यादा महत्व देते हैं?

यदि इन सब प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' हैं तो चिंता की कोई बात नहीं है। आप अपने तथा अपने बच्चे के ऊपर पूरा विश्वास रखें, तथा यह विश्वास समय-समय पर जताते भी रहें। आगे सब कुछ ईश्वर पर छोड़ दें।

बारिश की छतरी (पृष्ठ ४६ से आगे)

हम दाँत निपोरते हुए उसे छतरी पहुँचाने के लिए धन्यवाद तो देते हैं। मगर, दिल से हमेशा ही निकल जाता है कमबखत बड़ा फर्माबरदार बनता है। हर दिन इस छतरी से पीछा छुड़ाने के लिए हम नई-नई तिकड़म सोचते रहते हैं। मगर, जितना छतरी से दूर जाने की कोशिश करते हैं, छतरी है कि उतनी ही गले पड़ जाती है। हमारी सारी की सारी योजनाएँ धरी की धरी रह जाती हैं। सारे अरमानों पर पानी फिर जाता है और नतीजा वही - ढाक के तीन पात। अब फिर बारिश का मौसम अपने पूरे शबाब पर है। हर दिन छतरी से बचने के लिए हम जुगत भिड़ा रहे हैं। 'ना रहे बांस, ना बजे बांसुरी' के सिद्धान्त को भी अपना रहे हैं। अब देखें, इस बार क्या-क्या गुल खिलाती है हमारी - बारिश की छतरी।

कथा वाचन (पृष्ठ ४४ से आगे)

जब बच्चा स्वयं पढ़ने लायक हो जाए तब उन्हें अच्छी-अच्छी, सुंदर और सरल कहानियों की पुस्तकें पढ़ने को दें। इस प्रकार उनमें पढ़ने की रुचि उत्पन्न होगी, उनकी भाषा अच्छी होगी, साथ ही पढ़ी हुई कहानी अपने साथी बच्चों को भी वे सुनाएँगे। इससे बच्चों की स्मरण शक्ति भी बढ़ेगी। इतिहास, विज्ञान, पुराण, भूगोल, यात्रा, 'नेचर स्टडी' की कहानियाँ पढ़कर बच्चों का ज्ञान बढ़ेगा।

बच्चों के लिए कहानियों की किताब खरीदते समय खूब सोच समझ से काम लें। जिस प्रकार आप इस बात का ध्यान रखते हैं कि बच्चे ओछे, गंदे, बुरे विचारों की संगति से दूर रहें उसी प्रकार आप पुस्तकों के विषय में भी सावधानी बरतें। कहानियाँ सुनकर बच्चा अनजाने में ही उनसे प्रभावित होता रहता है, उनका असर बच्चे के मन पर पड़ता है अत: अपने बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए उसे अच्छी, मनोरंजक और शिक्षाप्रद कहानी सुनाइए।

महाभारत प्रश्नावली–३

सुधा अग्रवाल

महाभारत के पिछले अंक में प्रश्नावली के माध्यम से आपने "एकलव्य को द्रोणाचार्य ने क्यों धनुर्विद्या सिखाने को मना किया" तक की कथा की जानकारी प्राप्त की। अब आप महाभारत के आगे की कथा प्रश्नों एवम् उत्तरों के माध्यम से जानकारी प्राप्त करिए।

प्रश्न १- एकलव्य ने किसको अपना गुरु मान कर धनुर्विद्या का अभ्यास किया? एकलव्य कैसे सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बना?

(क) - द्रोणाचार्य को अपना गुरु माना एवं उनकी मिट्टी की मूर्ति बनाई। द्रोणाचार्य की मिट्टी की मूर्ति के सामने बहुत श्रध्दा से धनुर्विद्या एवं सभी अस्त्र-शस्त्र का अभ्यास करने लगे। एकलव्य बहुत ही निपुण एवं सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बने।

(ख) - एकलव्य को अर्जुन ने धनुर्विद्या सिखाई।

(ग) - एकलव्य निराश हो गया अथवा उसने धनुर्विद्या नहीं सीखी।

प्रश्न २ - द्रोणाचार्य ने एकलव्य से गुरु दक्षिणा में क्या माँगा?

(क) - द्रोणाचार्य ने गुरु दक्षिणा में एकलव्य से उसका धनुष माँगा।

(ख) - द्रोणाचार्य ने एकलव्य से कहा की यदि तुम सचमुच मेरे शिष्य हो, तो मुझे अपने दाहिने हाथ का अँगूठा दे दो। एकलव्य ने दाहिने हाथ का अँगूठा गुरु दक्षिणा में दे दिया।

(ग) - एकलव्य ने द्रोणाचार्य से कहा कि मैंने आप से शिक्षा नहीं सीखी है। मैंने तो मिट्टी की मूर्ति बना कर धनुर्विद्या का अभ्यास किया है।

प्रश्न ३ - कर्ण किसके पुत्र थे?

(क) - गांधारी के पुत्र

(ख) - कुंती के पुत्र

(ग) - सत्यवती के पुत्र

प्रश्न ४ - कर्ण किसके मित्र थे और किससे बदला लेना चाहते थे?

(क) - कर्ण अर्जुन के मित्र थे एवं भीष्म से बदला लेना चाहते थे।

(ख) - कर्ण भीष्म पितामह के मित्र थे एवं अर्जुन से बदला लेना चाहते थे।

(ग) - कर्ण दुर्योधन के मित्र थे एवं पांडवों से बदला लेना चाहते थे।

प्रश्न ५ - कर्ण को सूत पुत्र क्यों कहा जाता है, और उनके धर्मपिता का क्या नाम था?

(क) - कर्ण का लालन-पालन सूत जाति में हुआ था इसीलिए उन्हें सूत पुत्र कहा जाता है। उनके धर्मपिता का नाम अधिरथ था।

(ख) - कर्ण का लालन-पालन वैश्य जाति में हुआ था उनके धर्मपिता का नाम सिधिरथ था।

(ग) - कर्ण का लालन-पालन शुद्र जाति में हुआ था उनके धर्मपिता का नाम भागीरथ था।

प्रश्न ६ - दुर्योधन ने कर्ण को किस देश का राजा बनाया?

महाभारत प्रश्नावली–३

(क) - दुर्योधन ने कर्ण को हस्तिनापुर का राजा बनाया।

(ख) - दुर्योधन ने कर्ण को बनारस का राजा बनाया।

(ग) - दुर्योधन ने कर्ण को अंगदेश का राजा बनाया।

प्रश्न ७ - द्रोणाचार्य ने सभी राजकुमारों (कौरव-पांडव) को धनुर्विद्या सिखाने के बाद गुरुदक्षिणा में क्या माँगा था?

(क) - द्रोणाचार्य ने कहा कि मेरे लिए धृतराष्ट्र को युद्ध में हरा कर एवं उन्हें पकड़ कर ले आओ।

(ख) - द्रोणाचार्य ने कहा कि मेरे लिए अर्जुन को युद्ध में हरा कर एवं उन्हें पकड़ कर ले आओ।

(ग) - द्रोणाचार्य ने कहा कि मेरे लिए पंचालराज द्रुपद को युद्ध में हरा कर एवं उन्हें पकड़ कर ले आओ।

प्रश्न ८ - धृतराष्ट के श्रेष्ठ मंत्री का नाम क्या था?

(क) - कणिक (ख) - भीमसेन (ग) - भीष्म पितामह

प्रश्न ९ - युधिष्ठिर को किसने युवराज पद पर घोषित किया था?

(क) - भीष्म पितामह (ख) -धृतराष्ट (ग) -सत्यवती

प्रश्न १० - धृतराष्ट एवं दुर्योधन क्यों पांडवों की योग्यता पर जलते (वैर रखते) थे ?

(क) - पांडव बहुत शक्तिशाली एवं प्रजा के प्रिय थे, प्रत्येक युद्ध में विजय प्राप्ति कर लेते थे। कौरव इतने शक्तिशाली नहीं थे।

(ख) - पांडव बहुत निकम्बे थे, प्रत्येक युद्ध में हार कर आते थे।

(ग) - पांडव बहुत परेशान करते थे और युद्ध भी करने नहीं जाते थे।

प्रश्न ११- हस्तिनापुर मे पांडव के दुश्मन कन-कौन थे?

(क) - पांडव के दुश्मन भीष्म पितामह एवं दुर्योधन थे।

(ख) - पांडव के दुश्मन कर्ण, शकुनि, दुर्योधन एवं सभी कौरव थे।

(ग) - पांडव के दुश्मन कुंती, गांधारी एवं द्रौपदी थे।

प्रश्न १२- हस्तिनापुर की प्रजा क्यों चाहती थी कि हस्तिनापुर का राज्य पांडु के ज्येष्ठ पुत्र युधिष्ठिर को मिलना चाहिए?

(क) - क्योंकि धृतराष्ट जन्म से अंधे थे - पर वह हस्तिनापुर का राज्य इसीलिए सभांल रहे थे क्योंकि उनके छोटे भाई पांडु को किन्दम् मुनि से श्राप मिला था। इसलिए पान्डु ने आजीवन वनवास ले लिया था। परन्तु जब पान्डु का ज्येष्ठ पुत्र युधिष्ठिर बड़ा हुआ एवं वह सभी तरह से राजा बनने योग्य था। हस्तिनापुर की प्रजा चाहती थी कि युधिष्ठिर ही राज्य संभाले।

(ख) - क्योंकि युधिष्ठिर सबसे बड़े थे।

(ग) - क्योंकि युधिष्ठिर चाहते थे कि उन्हें राज्य मिले।

प्रश्न १३ - अश्वत्थामा किसके मित्र थे, वे कौरवों के पक्ष में थे या पांडवों के पक्ष थे?

(क) - अश्वत्थामा अर्जुन के मित्र थे और पांडवों के पक्ष में थे।

(ख) - अश्वत्थामा भीष्म पितामह के मित्र थे वे

महाभारत प्रश्नावली–३

किसी के पक्ष में नहीं थे।

(ग) - अश्वत्थामा दुर्योधन के मित्र थे वे कौरवों के पक्ष में थे।

प्रश्न १४ - पांडव को वारणावत जाने के लिए किसने छल से तैयार किया और किसकी चाल थी ?

(क) - धृतराष्ट ने पांडवों को वारणावत जाने के लिए छल से तैयार किया। धृतराष्ट एवं दुर्योधन की चाल थी कि पांडवों को वारणावत भेज दिया जाए।

(ख) - गांधारी की चाल थी कि पांडवों को वारणावत भेज दिया जाए।

(ग) - कुंती एवं पितामह की चाल थी कि पांडवों को वारणावत भेज दिया जाए।

प्रश्न १५ - दुर्योधन के मंत्री का नाम क्या था?

(क) - पुरोचन (ख) - सुलोचन (ग) - मुलोचन

प्रश्न १६ - दुर्योधन ने अपने विश्वास पात्र मंत्री पुरोचन को वारणावत में किस तरह का भवन बनाने को कहा?

(क) - दुर्योधन ने अपने विश्वास पात्र मंत्री पुरोचन को ऐसा भवन बनाने को कहा था जिसमें पांडव अच्छी तरह से रह सकें।

(ख) - दुर्योधन ने अपने विश्वास पात्र मंत्री पुरोचन को लक्ष भवन बनाने को कहा था जो कि सन, लाख, राल, घी, तेल आदि सामग्री से बना हो, ताकि उसमें आग आसानी से लग सके।

(ग) - दुर्योधन ने अपने विश्वास पात्र मंत्री पुरोचन को ऐसा भवन बनाने को कहा था जिसमें पानी न आता हो।

प्रश्न १७ - दुर्योधन ने लक्ष भवन पांडवों के लिए क्यों बनवाया था ?

(क) - दुर्योधन दिखाना चाहता था कि वह पाँच पांडव एवं कुंती का बहुत ध्यान रखता है।

(ख) - दुर्योधन चाहता था कि पाँच पांडव एवं कुंती अच्छी तरह लक्ष भवन में रहें।

(ग) - दुर्योधन का यह छल था ताकि जब पांडव सो रहे हों तो उस लक्ष भवन में आग लगा दी जाये और पाँच पांडव एवं कुंती सहित सभी जल कर भस्म हो जाएँ और दुर्योधन को हस्तिनापुर का राज्य मिल जाए।

प्रश्न १८ - विदुर जी ने अपनी सांकेतिक भाषा में युधिष्ठिर को लक्ष भवन के बारे में क्या कहा, और वह कैसे अपने भाइयों एवं अपनी माता को लक्ष भवन से बचा पाए?

(क) - विदुर जी ने कहा "नीतिज्ञ पुरुष को शत्रु का मनोभाव समझ कर उससे अपनी रक्षा करनी चाहिये" तुम्हारे शत्रु ने एक इस तरह का भवन तैयार किया है जो आग से भड़क उठने वाले पदार्थ से बना है। तुम सब लक्ष भवन से निकलने के लिए सुरंग (बिल) तैयार करवा लेना। रात को तुम सब सुरंग से निकल जाना और आप सभी की जान बच जाएगी।

(ख) - विदुर जी ने अपनी सांकेतिक भाषा में युधिष्ठिर को कहा कि तुम सब मंदिर में रहना।

(ग) - विदुर जी ने अपनी सांकेतिक भाषा में युधिष्ठिर को कहा कि तुम सब अपने हाथ से एक भवन बना कर उसमें रहना।

प्रश्न १९ - पांडव को सुरंग बनाने में किसने सहायता की और किसने सुरंग बनाने वाले को भेजा था?

महाभारत प्रश्नावली–३

(क) - सुरंग बनाने में पुलोचन जी ने सहायता की थी और पुलोचन जी का विश्वास पात्र कारीगर जिसने सुरंग बनाई थी ।

(ख) - सुरंग बनाने में विदुर जी ने सहायता की थी और विदुर जी का विश्वाश पात्र कारीगर जिसने सुरंग बनाई थी।

(ग) - सुरंग बनाने में नारद मुनि जी ने सहायता की थी और नारद मुनि जी का विश्वास पात्र कारीगर जिसने सुरंग बनाई थी।

प्रश्न २० - हिडिम्बासुर का वध किसने किया था?

(क) - हिडिम्बासुर का वध भीम ने किया था।

(ख) - हिडिम्बासुर का वध अर्जुन ने किया था।

(ग) - हिडिम्बासुर का वध नकुल ने किया था।

प्रश्न २१ - हिडिम्बासुर की बहन का नाम क्या था और उसकी शादी किससे हुई थी ?

(क) - हिडिम्बासुर की बहन का नाम हिडिम्बा था और उसकी शादी भीम से हुई थी।

(ख) - हिडिम्बासुर की बहन का नाम हिडिम्बाना था और उसकी शादी नकुल से हुई थी।

(ग) - हिडिम्बासुर की बहन का नाम हिडिम देवी था और उसकी शादी सहदेव से हुई थी।

प्रश्न २२ - भीम और हिडिम्बा के पुत्र का नाम क्या था?

(क) - हिडिम्बा और भीम के पुत्र का नाम रावनत्कच था।

(ख) - हिडिम्बा और भीम के पुत्र का नाम मुकुंत्कच था।

(ग) - हिडिम्बा और भीम के पुत्र का नाम घटोत्कच था।

उत्तर पृष्ठ ५७ पर...

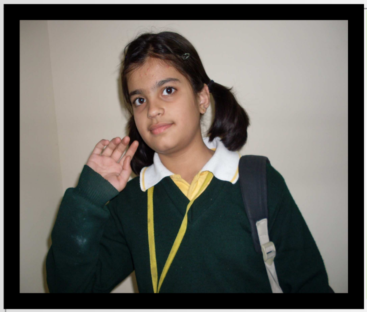

वागीशा शर्मा (११ वर्ष), इंदौर, पर जैसे साक्षात् माँ सरस्वती की कृपा बरसती है। मात्र ४ वर्ष की उम्र से वागीशा शर्मा ने विभिन्न मंचों पर अपने व्याख्यानों एवं हास्य कविताओं की प्रस्तुतियों का जो अनवरत सिलसिला शुरू किया, वह आज तक कायम है। संस्कृत, उर्दू, अंगरेजी के शब्दों, मुहावरों एवं काव्यांशों को हिंदी भाषा के साथ पिरोकर वागीशा जब मंचों पर अपनी वाणी कला की प्रस्तुति देती है तो हज़ारों-हज़ार मंत्रमुग्ध श्रोतागण तालियाँ बजाने पर विवश हो जाते हैं।

एक घिनौना मसला - आतंकवाद

जब अहिंसा को
समझ लिया जाए अप्रासंगिक,
जब संविधान को
मान लिया जाए निरर्थक,
जब प्रश्नों के हल
खोजे जाए बंदूकों से,
जब समाधानों के लिए
बातचीत पर ताले डाल दिए जाएँ,
तब आकार लेता है आतंकवाद।
जब मासूमों की किलकारियों से
हो जाए नफरत,
आरतियों से आने लगे
उन्माद की बू,
अजानो की गूंज में सुनाई दे
अबलाओं की चीखें,
और चर्च से हो जाए
माँ मरियम फरार
केवल सलीबों की होने लगे
बेसुरी जय जयकार
तब पल्लवित होता है आतंकवाद।
जब शुष्कता कर ले
सरसता का हरण
और निर्वस्त्र पांचाली कर बैठे
दुर्योधन का वरण
जब पैरों के नीचे से खिसकने
लगे
नैतिकता की ज़मीन
न्यायाधीश बन बैठे
दलाल, छली, कमीन
जयचंदों के हत्थे, धुंधली हो जाए
इंसानियत की दूरबीन
तब परवान चढ़ता है आतंकवाद|
कभी कुटिल कंस,
कभी आततायी रावण,
कभी चालबाज़ शकुनी,
कभी ओसामा बिन लादेन,
आतंकवाद का मुखौटा धरकर
कभी मुंबई की होटल ताज में
कभी गुजरात के अक्षर धाम में,
कभी वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर,

कभी संसद भवन के अन्दर,
जो धमाके करते हैं
उन्हें समझ लेना चाहिए
की आतंकवाद खुद एक मसला
है
एक घिनौना मसला
यह किसी मसले का हल क्या
देगा?
विद्वेष की ज्वालाएँ आज देगा
भूख और प्यास कल देगा
इसलिए ऐ आदम की औलादों
आतंक टलता रहे तो बेहतर है
मेरे और आपके मकां में
अमन का चराग जलता रहे
तो बेहतर है|
तो प्रिय पाठकों
आतंकवाद की नागफनी कुचलने
के लिए
गांधीवाद,

लेनिनवाद,

लिंकनवाद,

समाजवाद,
साम्यवाद,

पूंजीवाद,

के बिरवे रोपिये

तभी मिलेगा
ईश्वर का आशीर्वाद
और मानवता कह उठेगी
धन्यवाद धन्यवाद।

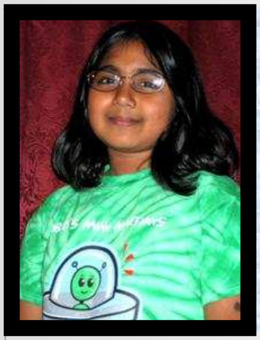

दस वर्षीय प्रणिति कुद्रे पिछले चार वर्षों से हिंदी यू. एस. ए. की जैक्सनविल पाठशाला में हिंदी का अध्ययन कर रही हैं एवं विशिष्ठा स्तर की छात्रा हैं।

नीला

आसमान का, और समुन्दर का भी,
फूलों का, और अशोक चक्र का भी,
शांति का रंग, और हवा भी नीली,
फीका नीला, और गहरा नीला भी,
आसमानी नीला, और नीला मोरपंखी,
नील कंठ, और मेरे सपने में से नीली परी,
भगवान कृष्ण, और शिवजी,
आकाश से अगर देखा, तो हमारी पृथ्वी भी नीली
अगर मैं चाहूँ, तो मैं अपना मन भी नीला कर सकती हूँ,
मुझे सिर्फ ये सारी सुन्दर चीजे याद करनी पड़ेंगी,
और फिर मेरे मन को भी शांति मिल जाएगी,
शांति मिल जाएगी।
मेरा सबसे प्यारा नीला रंग।

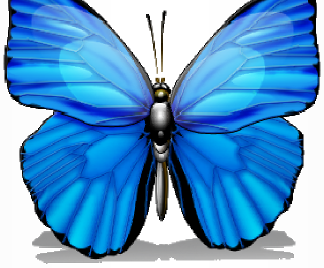

हिन्दी यू.एस.ए. - उपवन विहार २०११

इस वर्ष हिन्दी यू.एस.ए. ने उद्यान विहार के लिए क्रेनबरी काउंटी उद्यान को चुना। यह उद्यान बहुत ही रमणीय, शांत, स्वच्छ तथा मनमोहक था। १९ जून को प्लेंसबोरो के कार्यकर्ताओं ने प्रात:काल जाकर उद्यान में एक सुंदर स्थल चुनकर "हिन्दी यू.एस.ए." का बोर्ड लगा दिया। सुबह ११ बजे से ही अनेक स्वयंसेवकों, शिक्षकों, तथा अभिभावकों के परिवार उद्यान में एकत्र होने लगे थे। सभी के हाथ खेलने, खाने आदि के सामान से भरे हुए थे। लगभग ३० परिवारों ने पिकनिक में एकत्रित होकर हिन्दी यू.एस.ए. के इस वार्षिक आयोजन में आनंद उठाया।

एक ओर जहाँ महिलाओं ने अंताक्षरी का डेरा जमाया वहीं दूसरी ओर पुरुषों ने अपनी वॉलीबॉल टीम तैयार कर ली और वॉलीबॉल का खेल जम गया। खेल ऐसा जमा कि कोई खाना भी खाना नहीं चाह रहा था। बड़े आग्रह के साथ सबको भोजन करने के लिए तैयार किया गया।

सभी महिलाएँ बड़े उत्साह से विभिन्न भारतीय व्यंजन बनाकर लाईं थीं, जिसमें मुख्य थे छोले, आलू गोभी की सब्जी, पूड़ी, पुलाव, रायता, सलाद, पापड़ आदि। भोजन के बाद चावल की खीर, रसमलाई तथा तरबूज का आनंद उठाया गया।

भोजन के पश्चात एक सभा का आयोजन हुआ जिसमें सभी सदस्यों ने अपना-अपना परिचय दिया तथा महोत्सव का पुनरावलोकन किया।

शाम को ४ बजे हिंदी यू.एस.ए. परिवार ने डॉ. विजय अग्रवाल और उनकी पत्नी, प्रीति जी का स्वागत किया। डॉ. अग्रवाल एक प्रख्यात लेखक और एक विपुल वक्ता हैं। उन्होंने जीवन प्रबंधन पर न केवल चर्चा की, अपितु ये भी बताया कि यह हिंदुओं के तीन सबसे महत्वपूर्ण महाकाव्यों रामायण, महाभारत और गीता से कैसे संबंधित है।

संध्या ६ बजे तक पिकनिक को समाप्त कर सभी इस की मीठी यादें अपने साथ लेकर अपने-अपने घरों को गए।

महाभारत प्रश्नावली के उत्तर

प्रश्न # १ का सही उत्तर (क) है।

प्रश्न # २ का सही उत्तर (ख) है।

प्रश्न # ३ का सही उत्तर (ख) है।

प्रश्न # ४ का सही उत्तर (ग) है।

प्रश्न # ५ का सही उत्तर (क) है।

प्रश्न # ६ का सही उत्तर (ग) है।

प्रश्न # ७ का सही उत्तर (ग) है।

प्रश्न # ८ का सही उत्तर (क) है।

प्रश्न # ९ का सही उत्तर (ख है।

प्रश्न # १० का सही उत्तर (क) है।

प्रश्न # ११ का सही उत्तर (ख) है।

प्रश्न # १२ का सही उत्तर (क) है।

प्रश्न # १३ का सही उत्तर (ग) है।

प्रश्न # १४ का सही उत्तर (क) है।

प्रश्न # १५ का सही उत्तर (क) है।

प्रश्न # १६ का सही उत्तर (ख) है।

प्रश्न # १७ का सही उत्तर (ग) है।

प्रश्न # १८ का सही उत्तर (क) है।

प्रश्न # १९ का सही उत्तर (ख) है।

प्रश्न # २० का सही उत्तर (क) है।

प्रश्न # २१ का सही उत्तर (क) है।

प्रश्न # २२ का सही उत्तर (ग) है।

Award Winning Grand

13th Dushahra Celebration

तेरहवां दशहरा उत्सव

DUSHAHRA USA · VICTORY OF GOOD OVER EVIL · Indo-American Festival, NJ

Presented by Indo-American Festivals, Inc.
(Tax Exempt 501 (C) (3) A Not for Profit NJ Corporation)

in cooperation with SANKAT MOCHAN HANUMAN MANDIR USA

Sunday, October 9, 2011
11:00 AM - 9:00 PM
Rain-date: Sunday, October 16, 2011
Lake Papaianni Park,
Edison, NJ

WATCH the burning of the 25 ft effigies
Imported from India Ravan, Kumbhkaran and Meghnaad

Art by:
Baba Satya Narayan Mourya

Dazzling Ram Leela by Divya Jain Creations Dance Academy
Cultural Program, Karaoke Singing & Fashion Show by Juhi Jain
INTRODUCING DULHAN EXPO, Property Expo, Designer Oaktree Mall
RIDES FOR CHILDREN • WATCH SPECTACULAR FIREWORKS
Food Bazar, Jewelry Mandi, Fine Dress & Saree Mandi
Crafts Fair • Balloons, Popcorn & Candy
Astrology, Mehendi • Health Camp: FREE Health Screening

For more information call Mangal Gupta 732-234-6682
For Further Information and Directions: Please visit www.Dushahra.com or email info@dushahra.com
Any information regarding this event is subject to change without prior notice

Supported by Shri Sankat Mochan, Hanuman Mandir, NJ VIP Club, FIA-NY, ICS. of NJ

दशहरे मेले में हिंदी यू.एस.ए के बूथ पर अवश्य पधारिए